

Life is relationship and action.	सम्बन्ध और सक्रियता है जीवन
<p>Why does the mind create image? Life isn't an image. Life is strife, unfortunately. Life is constant conflict. Conflict is not an image. It is a fact, that which is happening, but why does the mind create images? Images mean, the speaker means by an image, a symbol, a concept, a conclusion, an ideal. These are all images - that is, what I should be, I am not this, but I would like to be that. That is an image projected by the mind in time, that is in the future. So that is unreal. What is real is what is actually taking place now in your mind. So we are asking why does the mind create an image? Is it because in the image there is security? First of all, sir, have you not an image about yourself, that you are a great man or that you are not a great man, that you are this, that and so on? When you live with images, you are living with illusions, not with reality. Now, what is the mechanism of making images? All organised, accepted, respectable religions have always had some kind of image. And mankind, with the help of the priest, has always worshipped the symbol, the idea, the concept and so on. In that worship he finds comfort, safety, security. But the image is a projection of thought. And to understand the nature of it, making images, you must understand the whole process of thinking.</p>	<p>मस्तिष्क क्यों छवि को रचता है? जीवन छवि नहीं है। जीवन संघर्ष है, दुर्भाग्यवश। जीवन अनवरत द्वंद्व है। द्वंद्व कोई छवि नहीं है। यह एक तथ्य है जो घटित हो रहा है। लेकिन क्यों मस्तिष्क छवियों का निर्माण करता है? छवियों का आशय है प्रतीक, अवधारणा, निष्कर्ष विचार। ये सब-के-सब छवियां हैं अर्थात्, मैं यह नहीं हूं, पर मैं वह होना चाहूंगा। वह एक छवि है मस्तिष्क द्वारा समय में प्रक्षेपित, वह भविष्य में है। अतः वह अयथार्थ है। जो यथार्थ है वह कभी आपके मस्तिष्क में वस्तुतः घटित हो रहा है। हम जानना चाह रहे हैं, क्यों मस्तिष्क एक छवि का निर्माण करता है? क्या यह इसलिए है कि छवि में सुरक्षा है? सर्वप्रथम, क्या आप खुद के बारे में कोई छवि नहीं रखते, कि आप एक महान व्यक्ति हैं या कि आप एक महान मानव नहीं है, कि आप मात्र वह हैं और इसी तरह? जब आप छवियों के साथ जीते हैं, आप विभ्रमों के साथ जी रहे हैं, यथार्थ के साथ नहीं। अब छवि निर्माण की रचना प्रक्रिया क्या है? समस्त संगठित, जन-स्वीकृत आदरणीय धर्म सदा किसी-न-किसी प्रकार की छवि से मुक्त होते हैं। और आदमी ने, पुरोहित की सहायता से, सदा प्रतीक को पूजा है, विचार को, धारणा को और इसी तरह। उस पूजन में उसे मिलती है सुविधा, सुनिश्चितता, छवि विचार का प्रक्षेपण है। और इसकी प्रकृति समझने के लिए छवि-निर्मिति की प्रक्रिया, आपको चिन्तन की संपूर्ण प्रक्रिया को अवश्यमेव समझना होगा।</p>
<p>So we are asking, what is thinking? We were saying image-making has been the habit of man, specially in the world of religion and he has also image about himself and we are asking, why does the mind, your mind, make images? Is it because in images there is security, however false the images are, without any reality, in an illusion man apparently seeks security. So to understand the image-making that is so common to mankind, one has to go into the question of what is thought, thinking and the nature of</p>	<p>तब सोचना क्या है? हम कह रहे थे कि छवि निर्माण आदमी की आदत रही है, विशेषकर धर्म की दुनिया में और वह स्वयं के प्रति भी छवि रखता है और हम पूछ रहे हैं क्यों मस्तिष्क, आपका मस्तिष्क, छवियां रचता है? क्या इसलिए कि छवियों में सुरक्षा है, चाहे जितनी भी झूठी? यद्यपि छवियां वास्तविकता से सर्वथा रहित है, वे भ्रम हैं, वे विभ्रम हैं, प्रकटतः आदमी सुरक्षा का सामान्य सच है, इस प्रश्न में प्रवेश करना होगा कि विचार क्या है, चिन्तन और विचार की प्रकृति। विचार ने प्रकृति का सृजन नहीं किया है। बाग, नदी, अद्भुत वृक्ष, जंगल और पहाड़, छायाएं</p>

thought. All thought. Thought has not created nature. Right, sir? The tiger, the river, the marvellous trees, the forests and the mountains, the shadows, valleys and the beauty of the earth, man has not created it. But man has created through thought the destructive machinery of war, man has brought about great medical, surgical improvement, man has brought about through thought instant communication, and so on. Thought has been responsible for great deal of good and great deal of harm. That is a fact. And a man who is serious wants to enquire if thought is ever capable of reducing any of these problems. So we must ask if you are willing and serious enough to find out for yourself what is thinking.

और पृथ्वी का सौन्दर्य, आदमी ने इनकी रचना नहीं की है। पर, आदमी ने विचार के माध्यम से युद्ध के विनाशकारी तंत्र का निर्माण किया है, आदमी ने चिकित्सा और शल्य-क्रिया के क्षेत्र में महान प्रगति भी की है। विचार उत्तरदायी रहा है ढेर सारी अच्छाई के लिए और ढेर सारी बुराई के लिए। यह एक तथ्य है और एक आदमी जो गंभीरतापूर्वक जानना चाहता है कि क्या विचार इन समस्याओं में से किसी के निराकरण में कतई समर्थ है, उसे अवश्यमेव पूछना चाहिए कि क्या खुद हम यह जानने को इच्छुक और पर्याप्त गंभीर है कि चिंतन क्या है।

Thinking is the response of memory, stored up in the brain as knowledge. Knowledge comes from experience. So mankind has had thousands of experiences from which it has derived a great deal of knowledge: factual, illusory, neurotic and so on, he has accumulated a great deal of knowledge. That knowledge as memory, is stored up in the brain. And when you ask a question, that memory responds as thought. This is a fact. We have discussed this matter with many scientists, some of them don't quite agree, others do, and so on. You can find this out for yourself: that is, you have an experience, you remember that experience which is knowledge and that knowledge with its memory projects thought. Is this clear? Right sir? No? Don't agree with me, please. Examine it for yourself. Look into yourself. If you have no experience, no knowledge, no memory, you can't think. So knowledge through experience, memory, and the response to a challenge which is thought, on that thought we live. Knowledge is always limited. There is no complete knowledge about anything. Right? This is a fact. So thought is always limited. However beautiful thought may build a

सोचने की क्रिया स्मृति की प्रतिक्रिया है जो मस्तिष्क में ज्ञान के रूप में संचित रहती है। ज्ञान अनुभव से आता है। मानवता ने हजारों हजार अनुभव प्राप्त किये हैं जिनसे उसने ज्ञान की राशि निःसृत की है, वास्तविक या काल्पनिक। वह ज्ञान स्मृति है, मस्तिष्क में संगृहीत। और जब आप एक प्रश्न पूछते हैं, वह स्मृति-प्रक्रिया ही विचार है। यह एक तथ्य है। इसे आप खुद जान सकते हैं : अर्थात् आप अनुभव से गुजरते हैं, आपने उस अनुभव को याद रखा है जो कि ज्ञान और वह ज्ञान अपनी स्मृति से विचार प्रक्षेपित करता है। क्या यह स्पष्ट है? स्वयं में झाँकिए। यदि आपके पास अनुभव नहीं, ज्ञान नहीं, आप सोच नहीं सकते। इस तरह ज्ञान अनुभव की मार्फत, स्मृति की मार्फत, एक चुनौती पर प्रतिक्रिया करता है जो विचार है। उस विचार पर हम जीते हैं। ज्ञान सदैव सीमित है। किसी चीज के बारे में सम्पूर्ण ज्ञान सम्भव नहीं। यह एक तथ्य है। विचार सदैव सीमित है। कितना भी खूबसूरत विचार हो, एक गिरजाघर, एक अद्भुत प्रतिमा, एक महान कविता, महान महाकाव्य और इसी तरह, ज्ञान से पैदा हुआ विचार अवश्यमेव सदा सीमित होगा क्योंकि ज्ञान सदा अधूरा है, ज्ञान सदा अज्ञान की छाया में है। अतः विचार ने इस छवियों की रचना की है, विचार ने आपके और आपकी पत्नी के बीच की छवि रची है, विचार ने राष्ट्रीयता की अवधारणा की रचना की है, अपनी तकनीक से, जो संसार को विनष्ट कर रही है

cathedral, a marvellous statue, a great poem, great epics and so on, thought born of knowledge must always be limited because knowledge is always incomplete, knowledge is always in the shadow of ignorance. Right? Right, sirs? So thought has created these images, thought has created the image between you and your wife, thought has created the idea of nationality with its technology which is destroying the world and so on and so on.

और इसी तरह।

Now we are asking, is it possible to live a daily life without a single image. Thought must function to go from here to your home. You must have knowledge where your home is, the road you take and so on. That knowledge must exist otherwise you would get completely lost. Knowledge to speak a language - knowledge is necessary for the speaker to speak English and so on. But is it necessary to create an image at all? You understand my question, sir? Can we live without a single image which means without any belief - which doesn't mean that you lead a chaotic life - without any belief, without any ideal, without any concept which are all projections of thought, therefore always limited? Therefore action - this is a bit more complex, I don't know if you will understand all this. Which is, action based on thought is always incomplete. Therefore one has to ask: is there an action which under all circumstances is correct. Are we walking together? Yes? Are we keeping in step with each other on the same path or is the speaker is walking by himself? Because this is a very serious matter, sirs.

Our minds are degenerating, becoming mechanical, lost, and that is why the youth is getting lost too. We are lost human beings; you may have a job, you may have a house, you may have all kinds of things, but inwardly you are lost, you are uncertain, unclear, you don't know what to believe. So for that reason

अब हम पूछ रहे हैं कि क्या यह सम्भव है कि दैनिक जीवन जिया जाय बगैर एक भी छवि के। विचार को अवश्यमेव क्रियाशील होना चाहिए ताकि आप यहां से अपने घर तक जा सकें। आपको अवश्य ज्ञान होना चाहिए कि आपका घर कहां है, वह सड़क जो आपको पकड़नी है और इसी तरह। उस ज्ञान को अवश्यमेव होना है अन्यथा आप बिल्कुल खो जायेंगे। कोई भाषा बोलने के लिए ज्ञान आवश्यक है, इस वक्ता के अंग्रेजी बोलने के लिए और इसी तरह। लेकिन क्या यह आवश्यक है कि एक छवि की रचना की जाय? क्या हम जी सकते हैं बगैर एक भी छवि के जिसका अर्थ है कि बगैर किसी विश्वास के, बगैर किसी आदर्श के, बगैर किसी धारणा के जो कि सब के सब विचार के प्रक्षेपण हैं। जिसका यह अर्थ नहीं कि आप एक विश्रुंखल जीवन जीते हैं अतः यह पूछना पड़ता है कि क्या कोई कर्म है जो सारी परिस्थितियों में सही है। क्या हम एक ही रास्ते पर पांव रख रहे हैं या वक्ता अकेला चल रहा है? महोदय हमारे मस्तिष्क विघटित हो रहे हैं, यान्त्रिक हो रहे हैं, धारा में खो रहे हैं; घर भी खो रहा है। आपके पास काम हो सकता है, आपके पास मकान हो सकता है, आपके पास तमाम तरह की चीजें हो सकती हैं, लेकिन आन्तरिक रूप से आप खोये हुए हैं आप अनिश्चित हैं, अस्पष्ट। आप नहीं जानते किस पर यकीन करना है। इस कारण से विचार के सम्पूर्ण महत्व को समझना अनिवार्य है। हम विचार पर जीते आये हैं। जो कुछ हम करते हैं विचार पर आधारित होता है। और जिस तरह विचार अधूरा है, हमारा जीवन भी अधूरा है। हम इसे भरने की चेष्टा करते हैं उस कुछ से जो हमें पूर्णता का अहसास दे। इस तरह हमारा जीवन एक अनवरत संघर्ष है और हम

one must understand the full significance of thought. We have lived on thought. Everything we do is based on thought. And as thought is incomplete, our actions, our life is incomplete. Knowing it is incomplete, we try to fulfil in something which will give us a sense of completeness. You understand this? So our life is a constant struggle, and we are saying that this conflict, this battle in ourselves and outwardly, it can end. It can only end when you understand yourself, not according to some priest, not according to some psychologist or some professor, but looking at yourself in the mirror. The mirror is your relationship. That is the mirror in which you can study yourself. Without knowing yourself - what you are, why you are, why you think these things, why you behave in such a way, you find in that mirror of relationship, all the answers. Sirs, you are the history of mankind, you are the story of mankind. You are the book in which you can read all about yourself, without any guide, without any priest, without any guru, without any philosopher. You can read that book, which is yourself. Unless you read it very carefully, listen to all the nuances, all the activity that goes on, you will always be in constant battle, always suffer, always be afraid. So it behoves an intelligent, earnest man to read the story of mankind which is the story of you. That story is not in an image - that's part of it. So you have to look. That means you have to listen very carefully to your thoughts, to your reactions, to your uncertainties, to your unhappiness, you have to listen to it. Find out. In listening is the answer. But you have to learn the art of listening which is not to interpret what you read, what you see, but to observe without any distortion, just to watch it.

कह रहे हैं इस द्वंद्व का अन्त हो, यह युद्ध जो हमारे आपे में मचा हुआ है और बाहर भी। इसकी समाप्ति हो सकती है केवल तभी जब आप स्वयं को समझ लें, किसी पुरोहित के अनुसार नहीं, किसी मनोवैज्ञानिक के अनुसार नहीं, न ही किसी आचार्य के, बल्कि स्वयं को आइनें में देखते हुए। यह आईना आपके सम्बन्ध का है। वह आईना है जिसमें आप खुद का अध्ययन कर सकते हैं। आप क्या है, आप क्यों है, आप क्यों ये चीजें सोचते हैं, आप क्या इस तरह से व्यवहार करते हैं। आप उस आइनें में अपने तमाम सम्बन्धों को खोजें, सारे उत्तरों को। आप मानवता का इतिहास हैं, आप मानवता की कथा हैं। आप ही वह किताब हैं जिसमें आप अपने बारे में सब कुछ पढ़ सकते हैं, किसी रहबर/राहरौ के बगैर किसी पुरोहित के बगैर, किसी गुरु के बगैर, किसी दार्शनिक के बगैर आप उस किताब को जो कि आप खुद हैं तब तक नहीं पढ़ सकते जब तक आप उसे बहुत ध्यानपूर्वक न पढ़ें। सारी अन्तर्ध्वनियों को सुनते हुए उस क्रिया प्रक्रिया को देखते हुए जो चल रही है। आप सदैव अनवरत संघर्ष में लीन होंगे, सदा पीड़ा सहेंगे, सदा धीत रहेंगे और इसलिए बुद्धिमत्ता और शिद्दत से भरा आदमी होना चाहिए जो मानवता की कहानी पढ़ सके जो कि आप की कथा है। वह कथा कोई छवि नहीं। यह उसका हिस्सा है। आपको देखना है। जिसका अर्थ है कि आपको बहुत अवधान पूर्वक अपने विचारों को सुनना है, अपनी प्रति क्रियाओं को, अपनी अनिश्चितताओं को, अपनी अप्रसन्नता को। खोजें उसमें ही उत्तर हैं। लेकिन आपको ध्यानपूर्वक सुनने की कला सीखनी होगी जो कि व्याख्यायित करना नहीं है जो कुछ भी आप पढ़ते हैं उसे, देखते हैं उसे, वह है बगैर किसी विरूपण के अवलोकन करना, सिर्फ ध्यानपूर्वक निरखना।

Have you ever watched a cloud? Yes, you must have. It is full of clouds in this country.

क्या आपने कभी ध्यान से बादल को देखा है? आपने अवश्य देखा होगा। इस देश में आसमान बादलों से

Have you watched them? There they are, the grandeur, the magnificence, extraordinary light and beauty in them. When you watch a thing, you are always naming it. Right? The very naming prevents the watching. You understand? All right, sirs? So our mind has become a slave to words: words are measurement and to observe without measurement, which is the word, then you see things exactly as they are. So to watch yourself, to see yourself exactly as you are without any distortion, without any direction, without any motive, just to watch it. You hear that statement and then you say, 'Tell me how to do it.' Right? Isn't that your question? No? 'Tell me how to do it'. Now why do you..

We made a statement that in watching, listening to yourself carefully without any direction, without any motive, you begin to read the story of mankind which is yourself. That is real education, not merely acquiring degrees and knowledge of other things. But real education is this: to read your life in the book of mankind which is you, and to read that book, you have to watch every reaction, every thought that is so quickly changing, one thought pursuing another. You have to watch it, not try to control it, not try to dominate, or push it aside, just watch it. Then you will say, that is very difficult to do it. And as it is difficult, please tell us how to do it - the method. When you ask such a question, how, what is implied in that? You want to know how to read that book as a child wants to know how to read the alphabet, he has to learn the alphabet. Right? So he goes through, carefully he is taught how to write a, b, c, and so on. In the same way, there is no 'how', just watch! The moment you ask 'how', you ask for a system, a method; and when you practise a method, a system in order to understand yourself, you are becoming mechanical. Yourself is a living thing and a living thing cannot be understood through a system. You have to watch it, you have to move with it,

भरा रहता है। क्या आपने कभी उन्हें ध्यान से देखा है? वे है भव्य, शानदार, असाधारण प्रकाश और सौन्दर्य संजोए हुए। जब आप किसी चीज को देखते हैं, आप सदा उसको नाम दे रहे होते हैं। नाम देने की प्रक्रिया अवलोकन को बरजती है। हमारे मस्तिष्क शब्दों के गुलाम हो गये हैं। शब्द नाप-तौल हैं। और जब आप बगैर नाप-तौल के अवलोकते हैं तभी चीजों को यथार्थतः जैसी वे है आप देखते हैं। अतः खुद को देखिए, खुद को देखिए वस्तुतः आप जैसे हैं बगैर किसी विरूपण के, बगैर किसी दिशा के, बगैर किसी अभिप्राय के, मात्र देखें। आप इस वक्तव्य को सुनते हैं, और तब आप पूछते हैं “मूझे बतायें यह कैसे किया जाये” जब आप कैसे का प्रश्न पूछते हैं, आप क्यों ऐसा प्रश्न पूछते हैं? आप समझते हैं मैं क्या कह रहा हूँ? मेरा वक्तव्य है कि देखने में अवधानपूर्वक स्वयं को सुनने में, बगैर किसी दिशा में, बगैर किसी अभिप्राय के, आप मानवता की कथा पढ़ना शुरू करते हैं जो कि आप खुद हैं। यह वास्तविक शिक्षा है, मात्र डिग्रियां और दूसरी चीजों को ज्ञान अर्जित करना नहीं। वास्तविक शिक्षा यह है आपके अपने जीवन को मानवता की किताब में जो आप खुद है पढ़ना और उस पुस्तक को पढ़ने के लिए, आपको प्रत्येक प्रतिक्रिया पर निगाह रखनी है, प्रत्येक विचार पर जो त्वरित गति से परिवर्तित हो रहा है, एक विचार दूसरे का पीछा करता हुआ। आपको इसे मात्र देखना है, इसे नियंत्रित करने का प्रयत्न करना नहीं, इसे शासित करने या एक ओर धकेल देने का प्रयत्न करना नहीं तब आप कहेंगे कि इसे करना बहुत कठिन है यह विधि जब आप पूछते हैं “कैसे, उसमें क्या अन्तनिहित है?” आप जानना चाहते है किताब कैसे पढ़ी जाये। एक बच्चा जानना चाहता है वर्णमाला कैसे पढ़ी जाये क्योंकि उसे वर्णमाला सीखनी हैं। अतः वह सावधानी से पढ़ता है, धीरे-धीरे, क, ख, ग, घ और इसी तरह पढ़ता यहाँ कैसे नहीं है, मात्र निरीक्षण। जिस क्षण आप पूछते हैं “कैसे” आप एक व्यवस्था की मांग करते हैं , एक प्रविधि और तब आप उस प्रविधि का अभ्यास करते हैं, आप यांत्रिक हो रहें होते हैं। आप स्वयं का जीवित चीज है और कोई जीवित चीज का व्यवस्था के माध्यम से नही समझी जा सकती हैं। आपको इसे ध्यानपूर्वक देखना होता है, इसके साथ चलना, इसे समझना और ऐसा करना बहुतेरे लोगों के लिए बहुत कठिन है और इसलिए वे कहते हैं मुझे बतायें इसे

<p>understand it and that is very difficult to do for many people and therefore they say: tell me how to do it quickly. There is no quick way to all this. There is only patient observation of yourself. Patience means not to react quickly, not to project your ideas, your opinions, they are part of you, but look, observe your opinions. So you need a great deal of patience, a great deal of attention - to attend, but that requires, sir, interest. That requires that you are dissatisfied with things as they are.</p>	<p>तुरंत कैसे किया जाये। इस सबके लिए कोई छोटा रास्ता नहीं। अकेला रास्ता है अपने आत्म का धैर्यपूर्वक अवलोकन आपकी अपनी धारणाओं का, आपके अपने विचारों का। यह सब आपका अंश है अपने विचारों को ध्यान से देखें। सो, आपको अत्यधिक धैर्य की जरूरत है, अत्यधिक ध्यान की और उसके लिए जरूरत है रुचि की।</p>
<p>Sri Lanka talks, Nov. 8th 1980</p>	<p>“श्रीलंका वार्ता” 8 नवम्बर 1980</p>
	<p>अनुवादक : डा. पुष्पिता</p>
<p>What is Religion</p>	<p>वस्तुतः धर्म है क्या?</p>
<p>You know, one of the strange things of life is what we call religion. You may have wealth, success; you may be very famous, well known; or you may have failures, sorrows, great many frustrations; at the end of it all, there is death that awaits all of us. Whether we live to be 100 or 10 or whatever it is, there is always death. Seeing all these, seeing our own littleness and the sorrows of ours, we, you and I, want to find something beyond ourselves. Because, after all, one gets very soon tired - tired of oneself, of one's success, of one's vanities, of the things that one does, the family, the money, position. When persons get tired of these things, they feel they are deceived. Then, in order to forget themselves, they try to identify themselves with something greater. That is, they like to think that there is something greater and so they say 'Perhaps, if I could think about that, live in that, meditate upon that, have an image, a picture, an idol of that, then I could forget myself in that.'</p>	<p>आप सभी जानते हैं कि जीवन की अद्भुत चीजों में से एक वह है जिसे हम धर्म कहते हैं। आप के पास धन हो, समृद्धि हो आप बहुत विख्यात एवं सुप्रसिद्ध हों अथवा आपके पास असफलतायें, दुख एवं अनेकों कुंठायें हों पर इन सबके अंत में है मृत्यु, जो हम सबकी प्रतीक्षा कर रही हैं। चाहे हम सौ वर्ष तक जीवित रहे हों या दस वर्ष तक या जो कुछ भी हो मृत्यु चिरंतन है। इन सबको देखते हुए अपनी क्षण भंडारता को अपने दुखों को देखकर हम सब लोग आप और मैं स्वयं से परे की कोई चीज प्राप्त करना चाहते हैं। क्योंकि अंततोगत्वा बहुत शीघ्र ही हम थक जाते है स्वयं से थक जाते हैं, अपनी असफलताओं से, अपने मिथ्याभिमानों से, उन कार्यों से जिसे हम करते हैं और अपने परिवार से, धन से, प्रतिष्ठा से। जब लोग इन चीजों से थक जाते हैं तो उन्हें ऐसा अनुभव होता है कि वे छले गये हैं। तब अपने को विस्मृत करने के लिए वे स्वयं को किसी महान चीज से तादात्म्य करने का प्रयत्न करते हैं। अर्थात् उन्हें विचार करना रुचिकर लगता है कि क्या इससे भी बड़ी कोई चीज है और इस प्रकार वे कहते हैं “संभवतः” यदि मैं उसके बारे में विचार कर सकता, उसमें जीता, उस पर ध्यान करता और उसकी एक छवि, एक चित्र एक मूर्ति मेरे पास होती तो मैं स्वयं को उसमें विस्मृत कर सकता।</p>

<p>When man tries to go beyond himself, beyond his struggles, beyond his sorrows, beyond all the things that perish round him, beyond all the things that live and die, he begins to search, to invent, to speculate. Actually, he does not really search, he does not really want to find out; but he hopes there is something which he calls god and clings to the belief in that which his mind has created, thus trying to escape from all these troubles. So, he begins to speculate, he begins to have theories of what God is, and he writes books. The more clever, the more cunning, the more subtle you are, the more ideas you have about God and you will build great many philosophies round it, systems of thought; and from that grows the thought `You must have beliefs in order to attain that reality, you must do certain practices, you must give up the world, you must do this and you must not do that in order to get there, in order to forget the troubles, the sorrows and the death that awaits all of us.' So, we have a religion which demands that we shall believe. Society also demands likewise because that is what each one of us wants - to believe in something much greater than ourselves, because we ourselves are very small.</p>	<p>जब मनुष्य स्वयं से, अपने संघर्षों से, अपने दुखों से, अपने चारों ओर की सभी नश्वर चीजों से, सभी जीवित एवं अजीवित चीजों से परे जाने का प्रयत्न करता है तब वह खोज करना, आविष्कार करना एवं विचार करना आरंभ कर देता है। पर वस्तुस्थिति यह है कि वह सही माने में खोज नहीं करता है, सही माने में पता लगाना नहीं चाहता है, अपितु वह किसी ऐसी चीज पर भरोसा करने लगता है जिसे वह ईश्वर कहता है' और उस धारणा से चिपक जाता है जिसे उसके ही मन ने निर्मित किया है, इस प्रकार वह उन सभी कठिनाइयों से पलायन करने का प्रयत्न करता है। अतः वह सोचना आरंभ कर देता है, वह उन सिद्धांतों का संग्रह आरंभ कर देता है कि ईश्वर क्या है और ग्रन्थों को लिखना प्रारंभ कर देता है। आप लोग बहुत चतुर, बहुत चालबाज और बहुत ही निपुण है, ईश्वर के बारे में आप के पास अधिकाधिक विचार हैं, और इसके इर्द-गिर्द आप अनेकों दर्शन निर्मित करेंगे, विचार पद्धतियां निर्मित करेंगे और उसी से ऐसा विचार जन्म लेता है, उस वास्तविकता को जानने के लिए आप के पास धारणायें अवश्यमेव होनी चाहिए, उसे प्राप्त करने के लिए कष्टों, दुखों एवं संकट मृत्यु जो हम सबकी प्रतीक्षा में है, विस्मृत करने के लिए आप को कुछ साधनाएं करनी चाहिए आपको संसार का त्याग करना चाहिए आप को यह करना चाहिए और वह तो निश्चित ही नहीं करना चाहिए"। इस प्रकार हमारे पास एक ऐसा धर्म है जो यह मांग करता है कि हम इन सब बातों पर विश्वास करें। समाज भी इसी तरह की मांग करता है कि क्योंकि हममें से प्रत्येक के लिए वह रुचिकर है किसी ऐसी चीज में विश्वास करना जो हमसे महान हो, क्योंकि हम अपने आप में बहुत तुच्छ है।</p>
<p>All our conflicts, all our ambitions, are very small, very petty. So, we also want to identify ourselves, call ourselves something - if it is not God, it is the State, the State being the whole of India or the whole world, the government, the people who rule, the society; if it is not that, it is an utopia, a something very far away, a marvellous society that we are going to build. In the building of it, you destroy many people, and it does not</p>	<p>हमारे सभी द्वंद्व, हमारी सभी महत्वाकांक्षायें बहुत ही तुच्छ है क्षुद्र हैं। अतः अपने को कुछ कहलाने के लिए हम तादाम्य भी चाहते हैं यदि ईश्वर न हो तो कोई साम्राज्य सारे भारत का हो या सारे विश्व का, चाहे कोई सरकार हो या समाज पर शासन करने वाले ही लोग क्यों न हो, यदि ऐसा भी संभव न हो तो हम एक काल्पनिक रामराज्य जो बहुत ही दूर की चीज है, या एक अद्भुत समाज की रचना करने से अपना संबंध जोड़ लेते हैं। और ऐसे समाज की संरचना के लिए आप अनेक लोग विनष्ट करते हैं</p>

<p>matter to you fundamentally if you are going to build that marvellous society. If you do not believe in any of these, you believe in having a good time - cars, refrigerators - thus to forget yourself in the material things. This one is called materialistic and the man who forgets himself in the spiritual world is called spiritual. , to lose oneself in the worship of something.</p>	<p>और यदि आप उस अद्भुत समाज की रचना करने जा रहे हैं तो मूलतः आपके लिये लोगों को विनष्ट करना कोई मानी नहीं रखता। यदि आप इनमें से किसी पर विश्वास नहीं करते तो आप उन शुभ घड़ियों में विश्वास करते हैं जब आपके पास कारें हो, रेफ्रिजरेटर हो इन प्रकार इन पार्थिव चीजों में आप अपने को भूल जाते हैं। इसको हम भौतिकवादी कहते हैं।</p>
<p>But both of them have the same intention behind them, one to forget oneself in cinemas and the other in books, in rituals, in sitting on the banks of the river and meditating, in renunciation not to have any burden, to lose oneself in some kind of action</p>	<p>वह मनुष्य जो अपने को आध्यात्मिक जगत में भुला देता है उसे हम आध्यात्मवादी कहते हैं। परंतु उसके पीछे दोनों का गन्तव्य एक ही है पहला अपने को सिनेमा में भुला देता है और दूसरा ग्रन्थों में, कर्मकाण्डों में, नदी के किनारे बैठने एवं ध्यान करने में, त्याग में हर प्रकार के बोझ से अपने को दूर रखने में, किसी प्रकार की क्रिया में अपने को भुला देने में, किसी की भक्ति में अपने को विस्मृत कर देने में।</p>
<p>So, there is the desire to lose oneself because oneself is very small. The self may not be small to you when you are young. But, as you grow older, you will see how little substance there is in it, how little value it has; it is like the shadow with few qualities, full of struggles, pains, sorrows and that is all. So, one gets soon bored with it and pursues something in order to forget oneself. That, is what all of us are doing. The rich, they too want to forget; only they forget themselves in night clubs, in amusements, in cars, in travelling. The clever ones also want to forget themselves; they are so clever that they begin to invent, to have extraordinary beliefs. The stupid ones also want to forget themselves; and so, they follow people, they have gurus who are going to tell them what to do. The ambitious ones also want to forget themselves in doing something. So, all of us, as we mature as we grow older physically, want to forget ourselves. There is the desire to forget oneself and so we will find something in which we can live, in which or through which</p>	<p>अतः हर हालत में अपने को विस्मृत कर देने की ही इच्छा रहती है, क्योंकि हम स्वयं में बहुत ही क्षुद्र हैं। जब तक आप छोटे हैं यह स्व तुक्ष नहीं हो सकता है। पर जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं आप देखेंगे कि यह सब कितना क्षुद्र है, इनका मूल्य कितना कम है यह छाया की भाँति कुछ क्षणिक गुणों के साथ संघर्षों, कष्टों एवं दुखों से भरा है। अतः जब कोई इससे शीघ्र ही ऊब जाता है और स्वयं को भूलने के लिए किसी चीज को ढूँढता है। यही है जो हम सब कर रहे हैं। जो धनवान है वे भी स्वयं को भूलना चाहते हैं वे स्वयं को रात्री के क्लबों के आमोद-प्रमोद में, कारों में, यात्रा में स्वयं को भूल जाते हैं। चतुर लोग भी स्वयं को भूलना चाहते हैं पर वे इतने चतुर हैं कि वे खोज करना आरंभ कर देते हैं उनके पास असाधारण धारणाएँ होती है। मंद बुद्धि लोग भी स्वयं को भूलना चाहते हैं और इसीलिए वे लोगों का अनुसरण करते हैं, उनके अपने अपने गुरु होते हैं जो उन्हें बताते हैं कि उन्हें क्या करना है। महत्त्वाकांक्षी लोग भी अपने को भूलना चाहते हैं, कुछ कर दिखाने में। इस प्रकार हम सभी जैसे-जैसे वयस्क होते हैं, शारीरिक रूप से वृद्ध होते हैं तो अपने को भूलना चाहते हैं। अपने को भूल जाना भी एक वासना है और इसीलिए हम ऐसी चीजों का पता</p>

<p>we can think, with which to identify, to receive something greater.</p>	<p>लगाना चाहते हैं जिसमें हम रह सकें, जिसमें या जिसके द्वारा हम विचार कर सकें, जिसके साथ हमारा तादात्म्य हो सके ताकि हमें कोई महान चीज प्राप्त हो जाय।</p>
<p>When we want to forget ourselves through something, through a State, through a God, through a belief, through a guru, through action, then it creates illusions, it creates a false thing. When I forget myself through an idea, then the idea becomes important, because I am forgetting myself through an idea. The ideal being an invention of the mind, it can also create illusions. So, I multiply illusions. These illusions, superstitions, beliefs are what we call religion, and so many books have been written about it, not how to dispel illusion but how to arrange illusion in order how to sympathise, how to philosophise that. But that is not religion, surely. Religion is not beliefs and dogmas, rituals and puja, putting on sacred threads, muttering some words, however old or however ancient they are. All those methods are a way of escaping from yourself through some kind of illusion. The escape which we call religion is not religion. Religion is something totally different, and the mystery of it is to find that which is not the invention of the mind.</p>	<p>जब हम किसी चीज के द्वारा, किसी साम्राज्य के द्वारा, किसी ईश्वर के द्वारा, किसी धारणा के द्वारा, किसी गुरु के द्वारा, किसी कर्म के द्वारा अपने को भूलना चाहते हैं तो यह भ्रम उत्पन्न करता है, तब यह मिथ्या चीजों को उत्पन्न करता है। जब हम किसी विचार के द्वारा अपने को भूल जाते हैं तो वह विचार महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि मैं उस विचार द्वारा स्वयं को भूल रहा हूँ। आदर्श, मन का आविष्कार है यह भी भ्रम उत्पन्न करता है, इस प्रकार हम भ्रान्तियों की उत्तरोत्तर वृद्धि करते जाते हैं। इन्हीं भ्रान्तियों, इन्हीं अंध विश्वासों इन्हीं धारणाओं को हम धर्म कहते हैं, और इनके बारे में अनेकों ग्रंथ लिखे जा चुके हैं, इसके लिए नहीं कि भ्रमों को कैसे दूर किया जाय, अपितु भ्रान्तियों को कैसे क्रमबद्ध किया जाय, कैसे मर्मस्पर्शी बनाया जाय, कैसे उसको दार्शनिक रूप दिया जाय। परंतु निश्चित ही यह सब धर्म नहीं है। धर्म विश्वास नहीं है, मताग्रह नहीं है, कर्मकाण्ड नहीं है, और पूजा पाठ नहीं है, उनेऊ धारण करना, कुछ शब्दों को बुदबुदाना चाहे वह कितने ही पुराने क्यो न हों, यह सब धर्म नहीं है, ये सभी प्रकार की विधियां किसी-न-किसी भ्रान्ति के द्वारा स्वयं से पलयन का ढंग है। इस पलायन को जिसे हम धर्म कहते हैं वह धर्म नहीं है। धर्म कुछ बिल्कुल ही अलग चीज है और उसक रहस्य को प्राप्त करना मन का आविष्कार नहीं है।</p>
<p>So, we have to find out what is real religion - the true religion which is not merely an invention of the mind; it does not matter whether it is the invention of Shankara or of anybody else as all such invention is still just a theory. Religion is something which is a state of being, which each one of us must find. That state of being cannot be understood, it may not come into being if we do not know how the mind creates illusions in its various subtle desires. As I said the other day, the mind is not just a superficial activity.</p>	<p>अतः हमें यह पता लगाना है कि वस्तुतः धर्म है क्या? सही धर्म मन का आविष्कार नहीं करता चाहे वह आविष्कार शंकर ने किया हो या अन्य किसी ने ऐसे सभी आविष्कार कोरे सिद्धान्त होते हैं। धर्म तो कुछ होने की अवस्था को समझा नहीं सकता उसका अस्तित्व तब तक नहीं होता जब तक कि हम यह नहीं जान लेते कि हमारा मन अपने अनेक सूक्ष्म वासनाओं में, भ्रान्तियों को कैसे उत्पन्न करता है। जैसा मैंने पिछले दिन कहा था कि मन केवल सतही क्रिया-कलाप नहीं है। गंगा वही नहीं है जिसे हम उसके उद्गम पर देखते हैं। गंगा आदि से अंत तक की सम्पर्ण नदी है, अपने उद्गम से लेकर जहां तक</p>

<p>Ganga is not just what we see on the top. Ganga is the whole river from the beginning to the end, from where it starts till it goes to the sea and you will be foolish to think that Ganga is just the water on the top. Similarly, we are very very complex entities and the inventions and the ideas, the theories, the superstitions, the rituals, the repetitions, the mantrams, those are just on the top. We have to go through and push all that aside, all of it, not just one or two ideas, not one or two beliefs or rituals that we do not like. That is very arduous, very difficult because most of us are afraid - afraid of what society, friends, parents say. But if one wants really to find out what is reality, God, one must go beyond all that, push all that aside. You can only push it aside if you understand and so go beyond.</p>	<p>यह समुद्र में गिरती है वहां तक, और यह सोचना आप की मूर्खता होगी कि सम्पूर्ण गंगा का जल वस्तुतः उसके उद्गम पर का ही जल है। उसी प्रकार हम लोगों की सत्ता बहुत ही जटिल है और आविष्कार, विचार, सिद्धांत, अंध विश्वास, पुनरावृत्तियां, यंत्र ये सब सतही चीजें हैं। इन सबको एक ओर ढकेल कर हमें बढ़ना है, मात्र उन्हीं एक या दो विचारों, धारणाओं एवं कर्मकाण्डों को ही नहीं जिसे हम पसंद नहीं करते। यह सब बड़ा ही दुष्कर एवं जटिल कार्य है क्योंकि हममें से अधिकांश भयग्रस्त हैं इस बात से भयभीत हैं। कि समाज मित्र अभिभावक क्या कहेंगे। परंतु यदि कोई वास्तव में इसका पता लगाना चाहता है कि सच्चाई क्या है, ईश्वर क्या है तो उसे निश्चित ही इन सब को एक तरफ हटा कर उसके परे जाना होगा। आप उसे एक तरफ केवल तभी हटा सकते हैं जब आप उसे समझें और इस प्रकार उसकी सीमाओं के परे चले जायें।</p>
<p>So religion is something which is entirely different from that in which we have been brought up. But, you see, very few of us are free from fear, and it is fear that prevents the discovery of what is God. Also, when we have fear, we become very insensitive. After all, when we look at a tree or a beautiful cloud or a beggar or a woman in tears or when we see something beautiful, the love of that thing, the love for itself, is the beginning of real religion. But, we do not live that way, we live in order to get something. I love my country because it is my country; this love of my country is a very subtle form of loving myself. But if you can love a tree, an animal, a human being - not for what it will give you but just to love it, without asking a thing in return - that is the beginning of religion. You can know that love only when there is no fear. When the mind is no longer afraid, then the mind can go beyond its own imaginations, its own projections, its own ideas.</p>	<p>अतः धर्म उस चीज से बिलकुल भिन्न है जिसमें हम लोगों का पालन पोषण हुआ है। परंतु आप देखें कि हममें से बहुत कम लोग भय से मुक्त हैं, और यह भय ही है जो ईश्वर की खोज से हमें रोकता है। यह भी कि जब हम भयभीत होते हैं तो हम बहुत ही असंवेदनशील हो जाते हैं। इन सबके बावजूद जब हम वृक्षों को, मनमोहक बादल को, भिखारी को, आंख में आंसू भरी महिलाको, अथवा जब आप किसी सुंदर चीज को देखते हैं तो उस चीज के प्रति प्रेम होना, तथा वह प्रेम स्वयं ही अपने आप में वास्तविक धर्म का आरंभ है। परंतु हम इस तरह से नहीं जीते हम तो कुछ प्राप्त करने के लिए जीते हैं। मैं अपने देश को इसलिए प्रेम करता हूं क्योंकि यह मेरा देश है; अपने देश के प्रति मेरा यह प्रेम बड़े ही सूक्ष्म रूप में स्वयं से ही प्रेम है। परंतु यदि आप किसी वृक्ष, किसी पशु, किसी मानव को प्रेम कर सकें इसलिए नहीं कि वह आप को कुछ देगा, अपितु मात्र उससे प्रेम, बिना यह पूछे कि वह बदले में क्या देगा तो यही धर्म का आरंभ है। उस प्रेम को आप तभी जान सकते हैं जब आप में भय न हो। जब तक मन भयभीत है तब तक वह अपनी कल्पनाओं, अपने प्रक्षेपणों अपने विचारों के परे नहीं जा सकता।</p>
<p>So, religion is something which is not an</p>	<p>अतः धर्म मन का आविष्कार नहीं है। यह मन की</p>

<p>invention of the mind. It is a state of being in which the mind is not inventing as it does now because it functions in fear, in desire, in success, in ambition, in various forms of activities. Only when the mind has understood the whole working of itself, then there is a possibility of the mind being quiet, being very still. That stillness is not the peace of death; that stillness is very active, very alert, very watchful, intensive, passive. Then alone, one can find out; then alone that which we call God, truth, or whatever name you like, comes into being. But, one cannot come to it. One has to understand the trees, the love of the trees, the love of the beautiful; one has to understand sorrow, joy and all the struggles of human existence; and then one can go beyond all that when the mind is really a cessation of the self, 'the me', it is only then that which we all worship, that which we are all seeking or trying to find out, comes into being.</p>	<p>वह अवस्था है जिसमें मन आविष्कार नहीं करता, जैसा कि वह कभी करता है क्योंकि वह भय में, सफलता में, महत्वाकांक्षा में तथा क्रिया-कलाप के अन्य रूपों में करता है। जब मन अपने सम्पूर्ण क्रिया-कलापों को समझ लेता है केवल तभी मन के शांत होने, मौन होने की संभावना होती है। वह शांति मृत्यु की शांति नहीं होती, वह नीरवता बड़ी सजग, बड़ी सजीव प्रगाढ़ एवं निश्चेष्ट होती है तब अकेला ही कोई पता लगा सकता है, तब अकेले में वह जिसे हम ईश्वर, सत्य या जो कुछ भी हम उसे कहना चाहे, अस्तित्व में आता है। हमें वृक्षों, वृक्षों के प्रति प्रेम को, सौन्दर्य के प्रति प्रेम को समझना है, हमें दुख को, आनन्द को किसी मानव के अस्तित्व में आने वाले सभी संघर्षों को समझना है और तभी कोई इन सबके परे जा सकता है। जब तक मन सचमुच में स्व का "मैं" का पर्यावसान कर देता है केवल तभी वह जिसकी हम सभी उपासना करते हैं, जिसकी हम सभी लोग तलाश कर रहे हैं या पता लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं, अस्तित्व में आता है।</p>
<p>J. Krishnamurti Benares, India 22nd January 1954 15th Talk to Students at Rajghat School</p>	<p>“टाक विथ इण्डियन स्टुडेण्ट” पन्द्रहवीं वार्ता</p>
	<p>अनुवादक डॉ महादेव राम विश्वकर्मा</p>
<p>What is a Religious Mind</p>	<p>क्या है धार्मिक मन?</p>
<p>We ought to talk over together the significance of death, religion and meditation. But before we go into all that, I wonder if one is aware of what is happening to our minds, to our brain, if one is aware of the extraordinary capacity of the brain in the technological world, the extraordinary things that the brain, which is the seat of thought, has brought about - extraordinary things are happening in the technological world of which most of us are unaware. And technologically we have progressed, advanced so rapidly, and psychologically - that is what we are, our behaviour, our attitudes, our actions - we are more or less unevolved. We are still aggressive, brutal, cruel, thoughtless - for thousands and thousands of years. And</p>	<p>धर्म तथा ध्यान और मृत्यु का महत्व क्या है इन सबके बारे में हम एक साथ मिलकर बातचीत करना चाहेंगे। इन सब बातों में जाने के पहले मुझे इस बात की आशंका है कि हम लोगों के मन एवं मस्तिष्क में जो कुछ हो रहा है उसके प्रति शायद ही कोई सचेत हो; तथा उन असाधारण चीजों के प्रति जो दिमाग में आती है जो विचार का स्थर है। तकनीकी रूप में तो हमने बड़ी उन्नति कर ली है, और हम बड़ी तेजी से आगे बढ़ें है पर मनोवैज्ञानिक रूप से हमारा व्यवहार, हमारी स्थिति तथा हमारे क्रिया-कलाप न्युनाधिक मात्रा में अविकसित ही हैं हम हजारों-हजार वर्षों से अब भी आक्रामक, क्रूर, निर्दयी एवं विचारहीन हैं, प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य वैसा ही व्यवहार कर रहा है जैसा कि उसने विगत चालीस हजार वर्षों से किया है। जो ऊर्जा हमारे पास थी और जिस तीव्रता से हमने उसका उपयोग तकनीकी जगत में</p>

apparently man is still behaving more or less as he behaved 40,000 years ago. And if one had that same energy, that same intensity as one uses in the technological world, if we could go very, very deeply into ourselves and go beyond ourselves, the brain has infinite capacity there too. But very few have taken that journey, very few have gone into this question whether the mind, the brain, can ever be free, totally free and therefore enquire very, very deeply, search out what lies beyond, if there is anything beyond thought.

किया है उसी ऊर्जा एवं उसी तीव्रता से हम अपने भीतर अत्यंत गहराई में प्रवेश कर सकते थे और स्वयं को जानकर उसके परे जा सकते थे इसके लिए भी हमारे मस्तिष्क में अनन्त क्षमता है। परंतु बहुत कम लोगों ने उसकी यात्रा की है, बहुत कम लोग इस प्रश्न की खोज में गये हैं कि क्या मन एवं मस्तिष्क कभी पूर्ण रूपेण स्वतंत्र हो सकता है या नहीं, और इस बात की गहराई से छानबीन की है, खोज की है कि मन एवं मस्तिष्क के परे क्या है, विचारों के परे कोई चीज है या नहीं।

Some of you perhaps have heard of genetic engineering. That is, man has not progressed, evolved to the same extent as the technological efforts. So the genetic experts say that they assume a factor, a creative element handed down from father to offspring, certain tendencies, qualities. This is what is called in part of the beginning of engineering, genetic engineering, they are saying since man - you - have not changed fundamentally for thousands of years, perhaps - and they assume - that man can be changed through genetic interference. We are putting it very, very briefly. It is a very complex question which we are not going to discuss, but we must understand what is going on. That as human beings have not deeply changed their characteristics, their way of life, their violence, they are hoping through certain chemical and so on to change the genes, the factors of that create certain characteristics from the father to the son. And also we should consider what is happening in the computer world. We cannot neglect all this - the genetic engineering and what is happening in the computer world. They are trying, perhaps successfully, or not, to create a mechanical intelligence, ultimate intelligence through the computer which will then think much more rapidly, more accurately and inform to the robots what they should do. This is happening already. And they are trying, as we have

आप लोगों में से कुछ लोग आनुवंशिक अभियांत्रिकी के बारे में सुन चुके होंगे। अनुवंशिकी में दक्ष लोगों का कहना है कि वे नियत प्रवृत्तियों एवं गुणों के लिए जीन, एक सर्जनात्मक तत्व को मानते हैं जो पिता से उसकी संतान को मिलता है। वे कह रहे हैं कि चूंकि हजारों वर्षों से मनुष्य में कोई परिवर्तन नहीं आया है अतः उनका मानना है कि आनुवंशिकी के हस्तक्षेप से उसे बदला जा सकता है। यह बड़ा ही जटिल प्रश्न है इसकी हम कोई चर्चा नहीं करने जा रहे हैं। परंतु जो कुछ हो रहा है उसे निश्चित रूप से हमें समझना चाहिए वह यह कि मनुष्य जैसा है यदि वह अपने चरित्रों अपने जीवन जीने की विधाओं, और अपनी हिंसा में गहराई से परिवर्तन नहीं कर लेता है तो वे किसी नियत रासायनिक प्रक्रिया के द्वारा या इसी प्रकार की किसी विधि द्वारा जीनों के उस कारण को जो पिता से पुत्र में आता है, बदल जाने की आशा कर रहे हैं। हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि कम्प्यूटर की दुनिया में क्या हो रहा है। हम आनुवंशिक अभियान्त्रिकी की एवं कम्प्यूटर की दुनिया जो कुछ हो रहा है उसकी अपेक्षा नहीं कर सकते। वे यान्त्रिक प्रतिभा को उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं, कम्प्यूटर के द्वारा उस आत्यंतिक प्रतिभा को जो अत्यधिक तीव्रता से अधिक शुद्धता से विचार कर सकेगी, और यान्त्रिक मानवों के द्वारा सूचित करेगी कि उन्हें क्या करना चाहिए। यह सब तो पहले से ही हो रहा है, और वे एक ऐसी मशीन, एक ऐसा कम्प्यूटर तैयार करने वाले हैं जिसके पास आत्यंतिक प्रतिभा होगी। इस प्रकार एक तरफ अनुवंशिक अभियांत्रिकी तथा दूसरी ओर कम्प्यूटर जो मनुष्य की तरह कार्य कर रहे, और एक-से-एक कम्प्यूटरों का

talked to others about this matter, they are trying to bring about a machine, a computer which has ultimate intelligence. You understand all this? So there is on the one side genetic engineering, on the other the computer taking, acting, as human beings, inventing generation after generation of computer, improving and so on - I won't go into all that. So what is going to happen to the human mind? You understand? What is going to happen to us when the computer can do almost everything that we do? It can meditate (laughter), it can invent gods, much better gods than yours, it can inform, educate your children far better than the present teacher, educators, and it will create a great deal of leisure to man. One has seen in Japan on a television, a computer instructing a robot how to build a car and the robot did some mistake, the whole machinery stopped and the computer told him what went wrong, and the computer did the right thing, and the whole thing started. You are understanding the nature of all this, the significance of all this? That is, what is going to happen to our minds when the computer and the genetic engineering are rapidly advancing, what is going to happen to us? We will have more leisure, the computer plus the robot will do a great many things that we are doing now in factories, in offices and so on. Then man will have leisure. And how will he use that leisure? You understand? Please go into this with me for a while. If the computer can outthink you, remember far more than you do, calculate with such astonishing speed and gives you leisure, either you pursue the path of pleasure which is entertainment - cinemas, religious entertainments - you know all the industry of entertainment, including gurus - and either entertainment or psychological search, seek out inwardly and find out for oneself a tremendous area that is beyond all thought. These are the only two possibilities left for us: entertainment or delving into the

आविष्कार हो रहा है, उसमें सुधार हो रहा है, और इसी तरह के अन्य बहुत से कार्य हो रहे हैं। इन सब चीजों में मैं नहीं जाऊंगा। यदि ऐसा है तो मानव मन का क्या होने जा रहा है? हमारा क्या होने जा रहा है, जबकि कम्प्यूटर वह सब कुछ कर सकता है जो हम करते हैं? यह ध्यान लगा सकता है, यह देवताओं का आविष्कार कर सकता है, आप के देवताओं से कहीं अच्छे प्रकार के देवताओं की, यह सूचना दे सकता है, आप के बच्चों को वर्तमान शिक्षक से अधिक अच्छी तरह शिक्षित कर सकता है, और मनुष्य के लिये यह अधिकाधिक अवकाश उत्पन्न करेगा। क्या इन सबकी वास्तविकता को आप समझ रहे हैं इन सबके महत्व को समझ रहे हैं? तो हम सबके मन का क्या होने जा रहा है? हमारे पास अधिक अवकाश होगा, कम्प्यूटर एवं यंत्र मानव मिलकर अनेकों बड़े-से-बड़े कार्य करेंगे जो इस समय हम अपने कारखानों, कार्यालयों आदि में कर रहे हैं। तब मनुष्य के पास बहुत अवकाश होगा। उस अवकाश का आप कैसे उपयोग करेंगे? कृपया मेरे साथ कुछ क्षण के लिए उस अवस्था का अनुभव करिये। यदि कम्प्यूटर आप को सोच विचार के परे कर सकता है, आप से कई गुना अधिक स्मरण कर सकता है, आश्चर्यजनक गति से गणना कर सकता है और आप को अवकाश देता है तो ऐसी स्थिति में या तो आप सुख की तलाश में लगे जो एक प्रकार से मनोरंजन है जैसे सिनेमा, धार्मिक मनोरंजन, और अपने गुरुओं सहित मनोरंजन के उन सभी व्यवसायों को जिसे आप सब जानते ही हैं, अथवा आप मनोवैज्ञानिक खोज में लगे, अन्तर्जगत की खोज में लगे, और स्वयं के लिए उस विशाल क्षेत्र का पता लगायें जो विचारों के परे हैं। मात्र यही दो संभावनायें हमारे लिए बच जाती हैं मनोरंजन में या मन की सम्पूर्ण संरचना एवं उसकी क्रियाओं के गहन शोध में लग जाना। अब हम पूछ रहे हैं कि हमारा मानव मन, हमारा मस्तिष्क क्या है। हम स्वयं अपने लिए इसका पता लगाने चल रहे हैं।

whole structure of the psyche and acting.	
<p>So we'll first begin by asking: what is the significance of death? It is not an old man's question. It is the question of all humanity whether we are very young or very old. What is the meaning, the significance, the extraordinary thing called death? Yesterday evening, we talked about several things including what is love, compassion. What is the relationship of life which is not only the whole human existence, what is its relationship to love, to death and to the whole search of man for thousands of years to find something that is beyond all thought. To understand the meaning of death, because we are all going to die - thank the lord. Right? We are all going to die. That is absolute certainty. And we are so afraid of it, or you rationalise it - you say yes, I accept it. I accept death as I accept pain, as I accept sorrow, as I accept loneliness, I also accept death. Which is to submit to suffer death, to allow the whole of existence of a human being to come to an end, either through disease, through old age or through some incident. We have never found out what it means to die while we are living, not commit suicide but to understand the depth of it. I hope we are together looking at it. You are looking at it as an incident of life, as a fact of life, as violence is a fact of life, as hatred is a fact of life. And we must if we are at all reasonable, sane, we must look at this question of death in similar manner, not accept it, not just say it is inevitable or try to find out what lies beyond death, but to observe the nature of dying.</p>	<p>हम पहले यह पूछना आरंभ करते हैं कि मृत्यु का महत्व क्या है? यह तो सभी लोगों का प्रश्न है चाहे हम बहुत युवा हों या बहुत वृद्ध। मृत्यु कहलाने वाली इस असाधारण चीज का क्या अर्थ है क्या महत्व है? कल सायंकाल हमने अनेक चीजों के बारे में बातचीत की थी, जिसमें यह भी सम्मिलित था कि प्रेम क्या है करुणा क्या है, जीवन से संबंधित होना क्या है जो केवल समस्या मानव के अस्तित्व से ही नहीं जुड़ा है, और प्रेम तथा मृत्यु से उसका क्या संबंध है, और मनुष्य द्वारा हजारों वर्षों से की जाने वाली उस चीज की सम्पूर्ण खोज, जो विचारों से परे हैं। हमें मृत्यु के अर्थ को समझना है क्योंकि हम सभी मरने जा रहे हैं। यह परमनिश्चित है हम मृत्यु से इतने भयभीत हैं कि हम उसे युक्ति संगत बना लेते हैं। आप कहते हैं “हां” मैं इसे स्वीकार करता हूं, मैं मृत्यु को वैसे ही स्वीकार करता हूं क्योंकि उसे तो आना ही है, मृत्यु का दुख तो भोगना ही है एक-न-एक दिन सभी लोगों का अंत होता है चाहे बीमारी के कारण, चाहे बुढ़ापे के कारण चाहे किसी दुर्घटना के कारण। जब तक हम जीवित हैं हम इस बात का कभी भी पता नहीं लगाते कि मरने का क्या मतलब है, इसकी गम्भीरता को समझिये। मृत्यु को आप जीवन की एक दुर्घटना की तरह या एक तथ्य की तरह देखते हैं जिस प्रकार हिंसा जीवन का तथ्य है, घृणा जीवन का तथ्य है। यदि हम बिलकुल उत्तरदायी एवं स्वस्थ चित्त वाले हैं तो हमें मृत्यु के इस प्रश्न को जैसा वह है उसी रूप में देखना चाहिए इसे न तो स्वीकार ही करना है और न अस्वीकार, यही कहना है कि मृत्यु तो अवश्यम्भावी है अथवा न तो यही पता लगाना है कि मृत्यु के पार क्या है, अपितु मरने की प्रकृति का अवलोकन करिये।</p>
<p>What does death mean to most of us? Please we are asking this question not rhetorically but to find out. Surely it means the ending both organically, biologically and to all the things that we have held dear, to all the wounds, pains, sacrifice, resistance,</p>	<p>हममें से अधिकांश के लिए मृत्यु का क्या अर्थ है? निश्चित ही इसका अर्थ ऐन्द्रिक एवं जैविक दोनों का अन्त होने से है, उन समस्त चीजों का जिसको हमने यहां पकड़ रक्खा है, सभी घावों का, दुखों का, त्यागों का, प्रतिरोधों का, अकेलेपन का, नैकट्य का सब का अंत हो जाना, इसका अर्थ यह है कि या तो स्व की,</p>

loneliness, despair - all that coming to an end. Which means either there is a continuity of the self, the 'me', or the ending of the 'me'. You are following all this? We said death is an ending. You can believe in reincarnation, as most of you perhaps do. If you do, you have to ask the question, what is it that continues? Is there a continuity? Or is there constant change - breaking, ending, beginning? You are following? So if you believe, as most people in India perhaps believe, that you are going to be reborn and what is it that is going to be reborn? Surely not the physical body, but if you believe in that, it is a continuity of what you are now - right? - continuity of your beliefs, your activities, your greed and so on and so on and so on. That is the bundle which is the consciousness, which is the self. Right? That self which is essentially consciousness is put together by thought - your greed, your envy, your religious belief, superstitions, your angers and so on - all those are the activities of thought. You are the result of a continuous movement of thought. And if you believe in reincarnation - (coughs) this awful weather, full of smog, foul air - so, if you believe all that, you must find out if it is an illusion or a reality. If you are your name, your form, your ideas, your conclusions, your experiences, are they the factor of continuity as the 'me' in the next life?

या मैं का सातत्य होता है या “मैं” का अंत हो जाता है। हमने कहा था कि मृत्यु सब का अंत है। आप पुनर्जन्म में विश्वास कर सकते हैं, जैसा कि आप में से अधिकांश लोग करते हैं। यदि करते हैं तो आप को यह प्रश्न करना चाहिए कि वह कौन-सी चीज है जिसका सातत्य होता है? क्या यहां सातत्यता है या अनवरत परिवर्तन है टूटना, अंत होना तथा आरंभ होना? यदि आप यह विश्वास करते हैं जैसा कि भारत में अधिकांश लोग करते हैं कि आप पुनर्जन्म लेते हैं। तो वह कौन-सी चीज है जो पुनर्जन्म लेती है? निश्चित ही यह भौतिक शरीर तो पुनर्जन्म नहीं लेता है परंतु यदि आप उसमें विश्वास करते हैं तो जो कुछ इस समय है आपकी धारणाएँ, आप के क्रियाकलाप, आप के लोग इत्यादि की गठरी, जो आप की चेतना है, जो स्व है उसी का सातत्य होता है। वह स्व तो सारभूत चेतना है जो विचार के द्वारा संग्रहित है आप का लोभ, आपकी ईर्ष्या, आपके धार्मिक विश्वास आपकी मूढ़ताएँ तथा आप का क्रोध इत्यादि, ये सभी विचार के क्रिया कलाप हैं। आप विचार की अनवरत गति के परिणाम हैं। यदि आप पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं तो आप को निश्चित रूप से यह पता लगाना चाहिए कि यह भ्रम है या वास्तविकता। यदि आप अपने नाम रूप, विचार, निष्कर्ष और अनुभव है तो क्या वे ही “मैं” के रूप में दूसरे जीवन में सातत्य के कारण हैं? “मैं” क्या है?

Now what is that 'me'? Go on, sirs, please search out with the speaker. This is a very important question. Each one of us, we think, is a separate entity, so-called individuals. And what is that individuality? The name, the form, what you remember, your attitudes, your loneliness, your pain, your anxiety, your chaos, your sorrow and uncertainty. You may have a bank account, or not, you may live in a nice house or a small little room or in a nice flat, but you are all that. You are the bank account. Right? Are you following all this?

हममें से प्रत्येक यही सोचता है हम एक पृथक सत्ता हैं, हम एक दूसरे से बिल्कुल पृथक हैं। यह पृथकता क्या है-- नाम, और रूप की पृथकता या जो कुछ आप स्मरण करते हैं उसकी पृथकता या आप की भंगिमाओं, आप के एकाकीपन, आपकी दुश्चिंता, आपकी दुर्व्यवस्था, आप के दुख एवं अनिश्चितता की पृथकता? आप भले ही एक सुंदर भवन या एक छोटे कमरे अथवा एक सुंदर निवास गृह में रहते हों, परंतु आप यही सब हैं। आपका बैंक खाता है। जब आप को बैंक से आसक्ति होती है तो आप बैंक खाता होते हैं, जब आप की किसी भवन से आसक्ति होती

When you are attached to a bank account, you are that bank account. When you are attached to a house, you are the house. When you are attached to your body, you are that. You may have lovely furniture, perhaps thirteenth, fourteenth century, you have marvellous furniture and if you are attached to that you are that furniture. So you are all that, which is what? Go on sir, think it out - when you are attached to a chair, to a person, to an idea, to an ideal, to your personal experiences, what are the implications of that attachment?

Why are you attached, because death says you cannot be attached - that's the end. You may believe in the future but death says you have ended, your attachments are over, your bank account is over, your guru and all your following is over. Right? So what is it that continues, that is reborn? Memories? Ideas? Which is what? Something dead. You are following? Or there is no continuity at all. You are following? Search out, please. Continuity means that which is goes on modifying itself. You are becoming something, and achieving it and wanting more. Continuity implies security, certainty. Are you certain about anything? Is there security in your ideas? So we want continuity. We hope to have continuity because in continuity we think there is security. One has been married for ten years, fifteen years, or five days, or fifty years - there is certain continuity - legal responsibility, but in that continuity there is conflict, misery, unhappiness, all the rest of that in that relationship. So there is no continuity at all. There is constant change if you are aware of it. Either that can be superficial; or a total mutation - not transformation but mutation, change - that which has existed completely undergoes a change.

One must find out for oneself what is fact, what is the truth of this matter. One cannot be convinced by argument, by so-called evidence and so on. One cannot be convinced about

है तो आप वह भवन ही होते हैं, जब आपकी अपने शरीर से आसक्ति होती है तो आप शरीर ही होते हैं। आप के पास मनोहारी काठ उपकरण हो सकता है यदि वे काठ उपकरण अद्भुत हों, और आप की उसमें आसक्ति है तो आप वह काठ उपकरण ही हो जाते हैं। अतः आप वह सभी कुछ हैं। जब आप की कुर्सी से, किसी व्यक्ति से, किसी विचार से, किसी आदर्श से किसी व्यक्तिगत अनुभव से आसक्ति हो जाती है तो उस आसक्ति का निहितार्थ क्या है? आप क्यों आसक्ति होते हैं, जबकि मृत्यु कहती है कि आप समाप्त हो गये हैं, आप की आसक्ति का अंत हो गया है आप का बैंक खाता समाप्त हो गया है। आपके गुरु और आपके अनुयायियों का अंत हो गया है। अतः वह कौन सी चीज है जिसका सातत्य होता है अर्थात् जो पुनर्जन्म लेती है वह क्या है? स्मृति? विचार? कुछ मर गया या बिलकुल ही कोई सातत्य नहीं है? कृपया इस पर विचार करें। खोजें। सातत्य का अर्थ है जो अपने को परिष्कृत करता जा रहा है। आप कोई चीज बन रहे हैं और आप उसे प्राप्त कर रहे हैं तथा और अधिक चाह रहे हैं। सातत्य सुरक्षा एवं निश्चितता से जुड़ा है। क्या आप किसी भी चीज के बारे में सुनिश्चित हैं? क्या आप के विचारों में सुरक्षा है? कोई दस पन्द्रह या पचास वर्षों से विवाहित है तो वहां कुछ सातत्य है, परंतु इस सातत्य में द्वंद्व है, दुर्दशा है, अप्रसन्नता है तथा इसी तरह की अन्य बातें हैं अतः वह सातत्य बिलकुल नहीं है यदि आप इसे सजगता पूर्वक देखें तो वहां अनवरत परिवर्तन है वह परिवर्तन चाहे सतही हो अथवा पूर्ण परिवर्तन हो। जो कुछ है वह पूर्णतः परिवर्तित हो रहा है। हमें स्वयं इस बात का पता लगाना चाहिए कि इसमें सच्चाई क्या है? किसी को भी किसी चीज से संतुष्ट नहीं किया जा सकता। हर एक को इसका शोध करना है और खोजना है कि इसमें क्या सत्य है और क्या मिथ्या है। हमने इस भ्रम में जी लिया है कि हम एक पृथक सत्ता है; जब आप अपनी चेतना का जो आप है यदि अत्यंत निकटता से उसका परीक्षण करें तो आप पायेंगे कि उसमें सम्पूर्ण मानव की भगीदारी है। वे भी उसी तरह दुखी होते हैं जैसे आप, वे भी उसी तरह अनिश्चितता की स्थिति में है जैसे आप वह भी आपही की तरह एकाकी, दुखी, भ्रमित एवं चिंतित हैं। अतः आप की चेतना मात्र आपकी ही नहीं है। यह सम्पूर्ण मानव की चेतना है। आप सम्पूर्ण मानव है यह मात्र तार्किक निष्पत्ति या

anything, one has to search out and seek and find what is true and what is illusion. We have lived with this illusion that we are separate entities. Whereas if you examine very closely, our consciousness which is you is shared by all humanity. They suffer as you suffer, they are uncertain as you, they are lonely, miserable, confused, anxious, as you are. So your consciousness is not yours. It is the consciousness of all humanity. So you are the entire humanity. It is not mere logical conclusion or observation but it is a fact. And we have been trained, educated both religiously, educationally that we are separate individuals. So we are frightened that individuality should come to an end. Right? You are following all this? But if one sees the reality, the truth that you are the rest of mankind, and then what is death? You understand? Instead of being frightened I may die and I hope to live next life, and I who wish to have continuity and hoping that continuing will modify, change gradually till it reaches god knows what, such a thought, such concept as an individual when one approaches the question of death, there is immense fear of ending.

अवलोकन ही नहीं है। यह एक तथ्य है। हम धार्मिक एवं शैक्षिक रूप से इस प्रकार शिक्षित एवं प्रशिक्षित कर दिये गये हैं कि हम पृथक एवं भिन्न हैं। हम लोग इस बात से भयभीत हैं कहीं यह पृथकता समाप्त न हो जाय। हम एक दूसरे से पृथक हैं, ऐसे विचार एवं धारणा से जब कोई मृत्यु के प्रश्न पर पहुंचता है तो वहां समाप्त होने का अत्यधिक भय रहता है। परंतु यदि कोई इस वास्तविकता एवं सत्य को देख लेता है तो मृत्यु क्या है?

Have you ever enquired what is the nature of ending. Not ending to begin something. Ending. That is, you are attached, that is a common fact - attached to your children, attached to your husband and wife, attached to something or other. And death comes along and wipes away that attachment. Right? You can't carry your money to heaven. You may like to have it till the last moment but you cannot take it with you, and death says, 'No.' So can we, living, understand the nature of attachment with all its fear, jealousy, anxiety, possessive feeling, while living be free of attachment? Are you following all this? Are you following what we are talking about? While you are alive, to end something voluntarily, easily without any pressure,

क्या आप ने इस बात की कभी गवेषणा की है कि अंत हो जोने की प्रकृति क्या है? उस अंत की नहीं जो कुछ प्रारम्भ करने के लिए किया जाता है अपितु पूर्ण समाप्ति? बात यह है कि आप मोह ग्रस्त हैं यह सामान्य तथ्य है, अपने बच्चों से, अपने पति से, अपनी पत्नी से या अन्य किसी चीज से आप आसक्त हैं। जब मृत्यु आती है तो आपकी उस आसक्ति को पोंछ देती है आप अपनी सम्पत्ति को स्वर्ग नहीं ले जा सकते हैं। परंतु आप उसे अंतिम क्षण तक अपने पास रखना चाहते हैं आप इसे अपने साथ नहीं ले जा सकते और मृत्यु यही कहती है कि नहीं आप इसे अपने साथ नहीं ले जा सकते। अतः क्या हम जीते जी आसक्ति के स्वभाव के साथ-साथ इससे जुड़े सभी प्रकार के भय, ईर्ष्या, दुर्श्चिता एवं स्वामित्व के अनुभव को समझ सकते हैं। और जीते जी आसक्ति से मुक्त हो सकते हैं ? जब तक आप

without any reward or punishment, to end. In that there is great beauty. Then one understands the nature of freedom.

In the ending there is no beginning, something new, there is an ending. And when there is an ending there is that feeling of total freedom of all the burden that humanity has carried for centuries. I know... one knows that you listen to all this, smile, nod your head and agree but you will go on being attached. That is the easiest way, the most comforting and the most painful, anxious way, but you will go on. And you call that practical. Whereas if you understand the nature of ending, ending your ambition in a very, very competitive world, understand the ending of your arrogance, your pride, your status. So when this so-called organism ends, the content of consciousness of humanity goes on, unless you bring about a radical change in that consciousness, a mutation so that you are no longer in that stream of selfishness, you are no longer caught, encaged, put in prison of attachment, uncertainty and so on. There is a totally different way of living.

जीवित है स्वच्छ से, सरलतापूर्वक बिना किसी दबाव के, बिना किसी दण्ड या पुरस्कार के इस आसक्ति का अंत कर दें, इस तरह से अंत करने में बड़ा सौन्दर्य है। तभी कोई मुक्ति के स्वभाव को समझ पाता है इस तरह का अंत कर देने में ही नूतन का आरंभ है। उन समास्त बोझों का जो सदियों से मनुष्य जाति ने ढोया है उसका अंत कर दें, और जब उसका अंत हो जाता है तभी उसे परम मुक्ति का बोध होता है। आप यह सब सुन लेते हैं, मुस्कराते हैं, अपने सिर हिलाते हैं और स्वीकार भी कर लेते हैं परंतु आसक्त होते रहते हैं। यह सब तो सबसे सरल तरीका है सबसे सुखदायी है और सबसे दुख दायी भी। परंतु आप यह सब करते रहेंगे। और आप इसे प्रयोग करना करते हैं। जब आप अंत हो जाने की इस प्रकृति को समझ लेते हैं तब आप अत्यंत स्पर्धा से भी इस दुनिया से अपनी आकांक्षा का अंत कर देते हैं, और गर्व अपने घमण्ड एवं अपनी वस्तु स्थिति का अंत हो जाने को समझ लेते हैं। जब आप अंत हो जाने की इस प्रकृति को समझ लेते हैं। जब यह तथाकथित जीवधारी शरीर का अंत हो जाता है तब भी मानव चेतना की अन्तर्वस्तु चलती रहती है, जब आप उस चेतना में मौलिक परिवर्तन तथा पूर्ण परिवर्तन लाते हैं तब आप स्वार्थपरता की धारा में नहीं बहते, तब आप आसक्ति एवं अनिश्चिता की पकड़ में, पिजड़े में, कैद में नहीं होते हैं। तब वहां जीवन जीने का ढंग बिलकुल ही भिन्न होता है।

And also we should talk about religion. Again it is a very complex question, and together we are going to find out what is a religious mind, a mind that is religious - not the mind that does puja, you know all the ceremonials and all the beliefs and all that - that is not religion, those are the inventions of thought. God is your invention because you find life so dull, boring. It is such a pain so you invent god who is all perfect, all loving, all beautiful - you know all that stuff. And you worship that. You worship that which you have put together by thought. So thought is deceiving you. I don't know if you understand all this. But you will go on because you love to live in

हमें धर्म के संबंध में भी बातचीत कर लेनी चाहिए। यह बड़ा ही जटिल प्रश्न है। हम लोग परस्पर मिलकर एक ऐसे मन की तलाश करने चल रहे हैं जो धार्मिक है; ऐसा मन नहीं जो पूजा करता है, जो सभी प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों, धारणाओं और इसी तरह के अन्य कर्मों को करता है। यह सब धर्म नहीं है। ये सब तो मन के आविष्कार हैं। ईश्वर आप के मन का आविष्कार है क्योंकि आप का जीवन इतना जड़ इतना उबाऊ, इतना दुखदायी है इसीलिए आप ऐसे ईश्वर का आविष्कार कर लेते हैं जो हर माने में परिपूर्ण हो, जिसको सभी प्रिय हो उसी को आप पूजते हैं और जिसे आप पूजते हैं वह आप के विचार का परिणाम है। इस प्रकार यह विचार ही आप को धोखा दे रहा है। परंतु आप उसे करते रहेंगे क्योंकि भ्रम में रहना आप को प्रिय है।

illusions. So we must find out what is a religious mind because a religious mind brings about a new world, a new civilisation, a new culture, a new outburst of energy. So one must find out for oneself, not be told, not be directed, not to be explained like a lot of children, what is a religious mind. Obviously all the religions in the world are the result of a great deal of intrigue, property, a great deal of wealth, all put together by thought. There is no denying that, however erudite you are, however sceptical you are or however religious you are - religious in the ordinary sense of that word. If you are willing to examine, as you must, if you are at all concerned with what is happening in the world and what is happening around you, you must enquire what is religion. Not accepting, not believing, not having faith - such activities are related to one's own desires, comforts, hope.

हमें निश्चित रूप से यह पता लगाना चाहिए कि धार्मिक मन क्या है, क्योंकि धार्मिक मन एक नूतन विश्व, एक नूतन सभ्यता, एक नूतन संस्कृति एवं नूतन ऊर्जा का स्रोत लाता है। प्रत्येक को निश्चित रूप से अपने लिए इस बात का पता लगाना चाहिए कि धार्मिक मन क्या है जो न तो कहा गया हो, न निर्देशित किया गया हो और न तो जिसकी व्याख्या की गई हो। अतः धार्मिक मन क्या है? आप इसका पता तभी लगा सकते हैं जब आप वर्तमान धार्मिक संरचना, धार्मिक धारणाओं और विचारों को पूर्णतः अस्वीकार कर दें, क्योंकि एक मुक्त मन ही यह पता लगा सकता है कि धार्मिक मन की गुणवत्ता क्या है।

First of all, one can see very clearly freedom is essential. Not freedom from something, a prisoner wanting freedom which means away from a prison. First he is caught in a prison, then he wants freedom to leave that prison. That is only a reaction. That reaction is not freedom. Freedom implies the total ending of all illusions, of all belief, of all your accumulated wants, desires. That freedom is something totally different from the desire to be free. A religious mind is a sane, healthy factual mind, faces facts, not ideas.

The speaker can go on explaining what is a religious mind. Perhaps you will accept the definitions or deny the definitions but merely arguing, analysing, questioning may help, but it may not necessarily bring about a religious mind. We have become too clever. So one has to have great humility, a sense of not knowing. And also a religious mind acts, because it is compassionate. And that action is born of intelligence. Intelligence, compassion, love all go together.

सर्वप्रथम कोई भी बड़ी स्पष्टता से यह देख सकता है कि मुक्ति अपरिहार्य है। किसी चीज से मुक्ति नहीं। एक कैदी मुक्त होना चाहता है इसका अर्थ यह है कि पहले जेल में बंद है फिर वह जेल से छूटने की स्वतंत्रता चाहता है। यह केवल एक प्रतिक्रिया है यह प्रक्रिया मुक्ति नहीं है। मुक्ति का अर्थ है सभी भ्रमों, धारणाओं, सभी संचित कामनाओं एवं वासनाओं का पूर्णतः अन्त हो जाना। धार्मिक मन, विवेकशील स्वस्थ एवं तथ्यगत होता है। यह तथ्यों का सामना करता है विचारों का नहीं। धार्मिक मन क्या है वक्ता इसे स्पष्ट कर सकता है। शायद आप इस परिभाषाओं को स्वीकार या अस्वीकार भी कर लेंगे और कोरा तर्क कर लेना, विश्लेषण कर लेना, तथा प्रश्न कर लेना कुछ लाभ प्रद भी हो सकता है, परंतु यह आवश्यक नहीं कि इससे धार्मिक मन प्राप्त हो ही जाय। अतः इसके लिए बड़ी विनम्रता एवं अज्ञानता का भाव रखना पड़ेगा। धार्मिक मन भी क्रियाशील होता है क्योंकि वह करुणावान होता है। उसकी क्रिया उसकी प्रज्ञा से उत्पन्न होती है। प्रज्ञा, प्रेम एवं करुणा यह सभी कुछ साथ-साथ होता है यही ध्यान है इस समय आप ध्यान करने वाले उचित आसन में मत बैठिये। उसका कोई अर्थ नहीं है। आप पालथीमार

<p>What is meditation? Don't suddenly sit up properly (laughter). That has no meaning. You may sit cross-legged, breathe properly, practise various systems, that is not meditation.</p>	<p>कर बैठ सकते हैं, प्राणायाम कर सकते हैं, विभिन्न ध्यान पद्धतियों का अभ्यास कर सकते हैं पर वह सब ध्यान नहीं है।</p>
<p>We are going to enquire, search out for ourselves what is meditation. The word 'meditation' means - the word - according to a good dictionary: to ponder over, to think over, to look closely, to come in touch with, not something sublime, invented by thought, but come close and touch your daily life. That is the ordinary dictionary meaning of that word 'meditation'. And also meditation implies measurement. The meaning of that word is to measure, also to think over, to ponder over, to consider and to measure. That is the meaning of that word.</p> <p>So, we'll begin by asking why do we measure? What do we mean by measurement? You understand?</p> <p>We asked why is there in our mind and heart this constant measurement? Measurement means comparison. To compare myself with you, who are beautiful, clear, certain, the whole feeling of your being is totally different from me. And I compare myself with you, wanting to be like you, wanting to be like your guru, like your highest - whatever the example is. Why do we compare at all in life? And we say we compare in order to make progress. In the technological world you have to compare. There must be measurement. Measurement was invented by the Greeks, ancient Greeks - to measure. And with us, we are always comparing: you are beautiful, I am not, I want to be as beautiful, as powerful as you are. Right? We want to be enlightened as you are. So there is always this competition of comparison between us. We are never free of that movement, but if we are free then what are we? You understand my question? If you don't compare, as you must compare between two materials, two clothes or two cars - there</p>	<p>हम अपने लिए इस बात की गवेषणा करने और खोज करने चल रहे हैं कि ध्यान क्या है। अच्छे शब्द कोश के अनुसार “‘ध्यान’ शब्द का अर्थ होता है मनन करना, विचार करना, बड़ी निकटता से देखना किसी ऐसी अवलौकिक चीज को जो विचार की खोज हो उसके सम्पर्क में न आना, अपितु अपने दैनिक जीवन के निकट और सम्पर्क में आना। यह “‘ध्यान” शब्द का साधारण शब्दकोशीय अर्थ है। ध्यान का निहितार्थ माप-तौल से भी है। यही सब ध्यान शब्द का अर्थ है। अतः हम पूछना आरंभ करते हैं कि आप माप क्यों करते हैं? हम माप-तौल का क्या अर्थ है? माप तौल का अर्थ है। तुलना करना। मैं अपनी तुलना आप से करता हूँ, आप जैसा होना चाहते हैं, अपने गुरु जैसा होना चाहते हैं, अपने सर्वोच्च आदर्श जैसा होना चाहते हैं चाहे वह कुछ भी हो। हम जीवन में तुलना ही क्यों करते हैं। हम कहते हैं कि हम तुलना उन्नति के लिए करते हैं, हम तुलना सदा करते रहते हैं। आप सुंदर हैं मैं नहीं हूँ मैं आप जैसा सुंदर एवं शक्तिशाली होना चाहता हूँ मैं आप जैसा प्रबुद्ध होना चाहता हूँ। हमारे बीच इस तरह की तुलना की प्रतिस्पर्धा सदा रहती है। इस तरह की गतिविधि से हम कभी मुक्त नहीं होते परंतु इस तरह की गति से यदि हम मुक्त होते तो हम क्या होते? क्या आप मेरे प्रश्न को समझ रहे हैं? क्या तुलना से मुक्त होना संभव है, क्या तुलना का अंत कर देना संभव है? यदि आप तुलना नहीं करते तो एक बहुत बड़े बोझ को जिसकी कोई वास्तविकता नहीं है आप उसे दूर फेंक देते हैं तब आप नहीं होते हैं जो आप हैं। वहां से आप प्रारंभ कर सकते हैं, परंतु यदि आप हर समय तुलना कर रहे होते हैं, कुछ अन्य हो रहे होते है। तब आप मूल में अप्रसन्न, भयभीत और इसी तरह के और कुछ होते हैं। अतः कृपया स्वयं से यह प्रश्न पूछें कि क्या आप बिना तुलना के, बिना किसी तरह की माप-तौल के जो बड़ा ही कठिन है कर सकते हैं क्योंकि हम इसके लिए शिक्षित एवं प्रशिक्षित किये गये हैं, हमें इसके लिए समझाया गया है कि हम यह है परंतु हम वह हो जायेंगे। वह होना</p>

you must naturally compare, but in human relationship why do we compare? And is it possible to be free of comparison, the ending of comparison? If you do, then you throw away a great burden that has no reality. Because then you are what you are. From there you can begin. But if you are always comparing, becoming somebody else, then you are fundamentally unhappy, anxious, frightened, and all the rest of it. So please ask the question of yourself whether you can live without comparison, without any form of measurement, which is quite difficult because we are trained, educated, convinced that we are this, but we will become that. The 'becoming that' is a form of measurement. To live without a single movement of measurement, that is part of meditation.

एक तरह की माप है। तुलना की एक भी गतिविधि के बिना जीना ध्यान का ही अंग है।

And most people who meditate now follow various systems. Each one has his own guru and he has laid down certain systems of meditation and you practise, repeat certain words over and over and over again, and you call that meditation. When you repeat over and over again, what is happening to your brain? You become more and more dull - which is what is... look at... You become a machine, and you think that is meditation. And you will go on doing it in spite of what the speaker is saying.

So when enquiring what is meditation, there can be no system, no effort. Effort means conflict. Right sir? Can you be free of systems, practice, realising the fact that your brain, your senses become dull? And perhaps that is what has happened to this country. And the tragedy of it. You are copying all the technology of the West. You have your own aeroplanes, your own guns, your own shells, and your own computers, your own - all from the West. And the West is making you more and more materialistic. We are not talking... we are not condemning the West. They have their own problems, as you have.

ध्यान करने वाले अधिकांश व्यक्ति ध्यान की अनेक पद्धतियों का अनुसरण करते हैं। प्रत्येक के पास अपने अपने गुरु होते हैं जिनके पास ध्यान की कुछ विशेष पद्धतियां होती है और आप उनका अभ्यास करते हैं कुछ विशेष शब्दों की बार-बार आवृत्ति करते हैं और उसी को ध्यान करते हैं। जब आप किसी चीज की बार-बार आवृत्ति करते है तो आपके मस्तिष्क को क्या होता है? आप अधिकाधिक मूढ़ होते हैं। आप एक यंत्र हो जाते हैं और सोचते हैं कि यही ध्यान है। वक्ता के कहने के बावजूद भी आप उसे करते रहेंगे। ध्यान क्या है जिज्ञासु के लिए ध्यान की कोई पद्धति नहीं हो सकती उसके लिये कोई प्रयास नहीं यही सकता। प्रयास का अर्थ है द्वंद्व। क्या आप ये ध्यान की पद्धतियों एवं उसके अभ्यास से मुक्त हो सकते हैं, क्या आपको इस बात का बोध होता है कि इससे आप की बुद्धि आप की इन्द्रियां मंद पड़ जाती है? क्या आप ध्यान-पद्धति से मुक्त हो सकते हैं? क्या मन एवं बुद्धि को इस बात का बोध हो सकता है कि किसी का अनुकरण करने का क्या अर्थ है क्या आपको कोई जो कुछ करने को कहता है उसकी आज्ञा का पालन इसलिए करना है क्योंकि वह अपने को गुरु कहते है! इस प्रकार की सभी चीजों ने धार्मिक मन के सौन्दर्य को नष्ट कर दिया है। योग समेत इन चीजों में से कोई भी चीज ध्यान नहीं है। तब ध्यान क्या हैं? आप अनुभव

So, can you be free of systems? It is so logical, so sensible, so sane that when you practise over and over again, sitting straight - you know all that silly stuff - you are becoming gradually mechanical, gradually dull, like those people who belong to certain communities, form little groups. You can't talk to them reasonably. They believe, they practice, and they are killing themselves. So can the mind, the brain realise what it means to follow somebody; to obey what somebody else tells you what to do, because he has got a different dress, calls himself a guru - all those things have destroyed the beauty of a religious mind. And meditation is none of these things, yoga included. Standing on your head and doing all those things, none of that is meditation, obviously. Then what is meditation?

We want experience. You are craving for some strange experience, so-called spiritual experiences. We have enough of experiences in this world, of pain, anxiety, sorrow, and we say we must have something more, greater experience. Experience has nothing whatsoever to do with meditation. To experience there must be an experiencer, and if there is an experiencer, that experiencer is the continuity of past memories which is the self. Meditation is the understanding of the whole structure of the 'me', the self, the ego, and whether it is possible to be totally free of the self. Not seek some super-self. The super-self is still the self.

So, meditation is something which is not a cultivated, determined activity. There must be freedom, and where there is freedom there is space. I wonder if we understand what space is. Have we space, apart from the physical world? Have we, living in Bombay, space? Hardly. Right? We live in a little flat or a little room and our minds gradually accept that little space. We are talking of space which has no walls. You know when you look at the sea, when the smog has gone and you see the far

चाहते हैं। आप कुछ विलक्षण अनुभवों की तथाकथित आध्यात्मिक अनुभवों की लालसा कर रहे हैं। आप के पास इस दुनिया में कष्ट दुश्चिन्ता एवं दुःख के पर्याप्त अनुभव हैं फिर भी आप कहते हैं हमें इससे भी अधिक महान अनुभव चाहिए। ध्यान का अनुभव से कोई लेना-देना नहीं है। अनुभव करने के लिए एक अनुभव कर्ता अवश्य है और वह अनुभव कर्ता अतीत की स्मृतियों का सातत्य होता है वही “स्व” है ध्यान इस “मैं” की “स्व” की, अहंकार की सम्पूर्ण संरचना की समझ है और इस बात की समझ है कि इस स्व से पूर्णरूपेण मुक्त होना संभव है या नहीं, यह किसी उच्च स्व की खोज नहीं है। उच्च स्व भी स्व ही होता है। अतः ध्यान कोई ऐसी क्रिया नहीं है जिसका परिष्कार किया जाय जिसकी पहचान की जाय। इसके लिये स्वतंत्र होना आवश्यक है और जहां स्वतंत्रता है वहां रिक्तता है। क्या हम भौतिक जगत के बीच रिक्त रखते हैं। क्या बम्बई में हमारे पास रिक्त स्थान होता है? बड़ी कठिनाई से। वहां तो हम एक छोटे से मकान या कमरे में रहते हैं और धीरे-धीरे हम उस छोटी सी रिक्तता को स्वीकार कर लेते हैं। हम उस रिक्त स्थान की बात कर रहे हैं जहां दीवारें नहीं होती। आप जानते हैं कि जब आप उस समय समुद्र की ओर के सुदूर क्षितिज को देखते हैं जब कि कुहरा समाप्त हो चुका हो तो उस विशाल घेरे में जब आप सितारों एवं उनकी असाधारण चमक को तथा विशाल आकाश को देखते हैं और उस आकाश को भी जो आप के मन में है, तो मन का आकाश कितना छोटा और संकीर्ण दिखाई पड़ता है, आप के हृदय एवं मन का वह आकाश कितना नियमित एवं संकीर्ण होता है। बड़ी कठिनता से आप में कोई अवकाश होता है। उस पावन चीज को समझने के लिए बाहर समुद्र पर नहीं आप के अन्तर्गत में एक विशाल आकाश का होना, रिक्त स्थान का होना अति आवश्यक है। यह रिक्त स्थान अलगाव नहीं है। यह रिक्त स्थान विभाजन नहीं है। जब आप विभाजित होते हैं तो आप एवं आप की पत्नी के बीच दूरी होती है, भारत के रूप में आप एवं अन्य देश के बीच दूरी होती है पर यह रिक्त स्थान नहीं है। उस आन्तरिक आकाश का अस्तित्व तभी हो सकता है जब कहीं भी द्वंद्व न हो। तो जब मन विशाल अंतहीन आकाश होता है शून्य होता है तो केवल ऐसे ही शून्य में ऊर्जा होती है विचार के संघर्ष वाली ऊर्जा नहीं क्योंकि वह ऊर्जा तो स्वतंत्रता

horizon, the vast distance, and when you look up at the stars and see their extraordinary brightness and vast space, and the space that you have in your mind, how small it is, how narrow it is. That space in your heart and mind is so controlled, shaped, put together, so there is hardly any space in you. To understand that which is sacred there must be vast space - in you, not out there in the sea. You understand? Space is not separation. Space is not division. When you divide there is space - between you and your wife, between you as India and another country. But that is not space. The space demands inwardly, can only exist when there is no conflict whatsoever. Then when there is that vast limitless space of the mind, then only in that space there is energy. Not the energy and friction of thought, because that energy is born out of freedom.

When there is that space and silence and that immeasurable energy, then that which is utterly nameless, measureless, timeless, then there is that which is sacred. But to find that, one must have great love, great compassion which must begin at home. One must love your wife, your children, your husband. Love cannot exist with attachment. Then if it is attachment, then you have all the problems of life.

So, sirs and ladies, it is your life. Either you bring about a great radical psychological revolution in yourself, or the chemists, the experts of the genetic world are going to make you do something. Then you will become merely machines. Then life will have very little meaning. But there is great significance, great meaning if you know, if you are aware what love is, compassion and intelligence, and out of that comes great silence and vast space. All that cannot exist if there is any shadow of selfishness. And this is meditation, and not the repetition of words, not the discipline of will, but the discipline of order which comes when there is no conflict.

से उत्पन्न होती है। जब ऐसा शून्य, ऐसी शांति एवं ऐसी असीम ऊर्जा होती है तब वहां वह चीज होती है जो पूर्णतः अनाम है अमापनीय है एवं समयातीत है, तब वह चीज होती है जो परम पावन है। परंतु उसे पाने के लिए हमारे पास अत्यधिक प्रेम एवं करुणा की आवश्यकता होती है जिसे अपने गृह से ही आरंभ करना चाहिए। आप को अपनी पत्नी, अपने बच्चों, अपने पति से प्रेम होना आवश्यक है आसक्ति में प्रेम का अस्तित्व नहीं हो सकता। यदि आप में आसक्ति है तो आप के जीवन में अनेक समस्याएँ होंगी। अतः भद्र पुरुषों और महिलाओं यह जीवन आपका है। या तो आप लोग अपने अन्दर एक महान मौलिक एवं मनोवैज्ञानिक क्रान्ति ले आइये अन्यथा अनुवंशिकी के विशेषज्ञ कुछ करके आपका निर्माण करने जा रहे हैं। तब आप मात्र एक यंत्र बन जायेंगे। तब जीवन का अर्थ बहुत ही क्षुद्र हो जायेगा। परंतु यदि आप इन चीजों के प्रति सतर्क हैं कि प्रेम क्या है, करुणा क्या है, प्रज्ञा क्या है तब जीवन का बहुत महत्व एवं अर्थ होता है। तब इससे बड़ी एवं विशाल शून्यता का जन्म होता है यह सब कुछ तब तक नहीं हो सकता जब तक की स्वार्थ परता की कोई भी छाया विद्यमान है। और यही ध्यान है न कि शब्दों की पुनरावृत्ति, न कि संकल्प का अनुशासन, परंतु सुव्यवस्थित अनुशासन तभी आता है जब किसी प्रकार का द्वंद्व नहीं होता।

J. Krishnamurti Fourth Public Talk in Bombay 30 January 1983	माइण्ड विदाउट मेजर, मुम्बई वार्ता ४ अनुवादक डॉ महादेव राम विश्वकर्मा
Beauty of Life	जीवन का सौन्दर्य
<p>A lovely morning! Did you notice the blue sky? How extremely limpid it is, clear, very quiet! Did you notice the river this morning? There was no ruffle on it; and the sun early in the morning, how peaceful it was! You know, that is the kind of thing that we want - and not only the people who live on the river side - this extraordinary peace. When we have it, we do not know that we have it. That is the strange part of it. Those fishermen living in that village, they also do not know. They have all that beauty, that quietness, that sense of being alone with nature; but they are not satisfied because they are hungry. They have to struggle for life; so, in spite of this extraordinary beauty and quietness, there is constant battle going on. They want more money, their children are ill, their wives, their husbands or grownup mothers are dying and so, in spite of this tranquillity, there is a great deal of disturbance.</p> <p>It is so with most of us too. As we grow older, we want to live alone.</p>	<p>मनोहारी प्रातः बेला! क्या आप ने आकाश की नीलिमा पर ध्यान दिया था? यह कितना अधिक स्वच्छ है, स्पष्ट और शांत! इस प्रातः बेला में क्या आप ने नदी पर ध्यान दिया था? इसकी शांति में कोई विघ्न नहीं था, और प्रातः कालीन सूर्य भी कितना निष्कण्टक था! आप जानते हैं कि ऐसी ही चीजों की हम कामना करते हैं मात्र वे ही लोग नहीं जो नदी के किनारे रहते हैं इस असाधारण शांति की। जब हमारे पास यह सब कुछ होता है तो हमें इसका आभास ही नहीं होता कि हमारे पास यह सब भी है। यह सब इसका अभूतपूर्ण भाग है। वे मछुआरे जो उस गांव में रहते हैं वे भी इस चीज को नहीं जान पाते। उनके पास भी यह सब सौन्दर्य होता है; इसी तरह की शान्ति प्रकृति के साथ एकाकी होने का बोध फिर भी वे संतुष्ट नहीं होते, क्योंकि वे भूखे होते हैं। उन्हें जीवन के साथ संघर्ष करना पड़ता है, अतः इस असाधारण सौन्दर्य और शांति के होते हुए भी उनका संघर्ष अनवरत जारी रहता है। वे अधिक धन चाहते हैं, उनके बच्चे, उनकी पत्नियां, उनके पति बीमार होते हैं या उनकी वयोवृद्ध मां बीमार होती है, इसीलिए ऐसी शांति के बावजूद भी वहां अत्यधिक बेचैनी होती है। हममें से अधिकांश के साथ भी ऐसा ही होता है, जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं हम एकाकी होना पसंद करते हैं।</p>
<p>When we know we are not concerned with peace, with tranquillity, with beauty, but when we only want to enjoy, to have a good time, to play about, to see things as they are, we do generally see children, everything, factually as they are. But as we grow older, we want so many things, we want to be happy, we want to have virtue, we want to have good position, we want children, we compete with each other for a better job, to have position where there is more power and so on. But underneath all,</p>	<p>इस बात को हम जानते हैं कि जब हम शांति व्यवधानों से मुक्ति एवं सौन्दर्य के लिए चिंतित नहीं होते, अपितु जब हम मात्र आनन्द चाहते हैं, शुभ समय चाहते हैं, खेलना चाहते हैं, चीजों को जैसी वे हैं, उसे वैसा ही देखना चाहते हैं, तब हम बच्चों जैसे होते हैं जो समान्यतया प्रत्येक चीजों को जैसी वे है उसे वैसा ही देखते हैं। परंतु जब हम बड़े होते हैं। तो अनेक चीजों की मांग करते हैं हम आनन्द की कामना करते हैं, सद्गुण चाहते हैं हम अच्छी स्थिति में होना चाहते हैं, हम संतान चाहते हैं हम और</p>

we want to be left alone, we do not want to be disturbed, we want our thoughts to run in easy grooves; and so, we set up habits of easy thought, easy existence, have a comfortable job and there stagnate. So, most of us, as we grow older, want to be left alone, we do not want to be disturbed; and this state of non-disturbance is what we call peace. For most of us, that is peace - having a clear sky. But in this clarity there are great many things going on, a great disturbance in the atmosphere, which we do not see. What we see is very superficial, is just on the surface. The kind of tranquillity we want, is a superficial calm, an easy existence; and that we call peace. But peace is not so easy to go by. We can only understand peace when we understand the great disturbance, the discontent in which each one of us is caught, when the mind is free from easy thought easy grooves of pattern of action, when we are really disturbed - which we all avoid.

काम करने के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं हम ऐसा पद पाना चाहते हैं जहां अधिकाधिक अधिकार है और इसी तरह की अन्य बातें परंतु इन सबके अन्तर्तम में यह है कि हम एकाकी होना चाहते हैं, हम अशांत होना नहीं चाहते हम अपने विचारों की दौड़ सरल लीकों पर चाहते हैं और इस प्रकार हम सरल विचारधारा को सादे जीवन को तथा आराम देह पेशे को अपना लेते हैं और वहीं स्थिर हो जाते हैं। इस प्रकार हममें से अधिकांश लोग जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, वैस-वैसे हम एकाकी होना पसंद करते हैं हम अशांत होना नहीं चाहते हैं और इस व्यवधान वाली स्थिति को ही हम शांति कहते हैं। हममें से अधिकांश के लिए स्पष्ट आकाश का होना ही शांति है। परंतु इस स्पष्टता में अनेकों चीजें घटित होती है, इस वायुमण्डल में बड़ी अशांति भी है जिसे हम नहीं देख पाते। जो कुछ हम देखते हैं वह बड़ा सतही होता है, बिल्कुल सतह पर का। जिस प्रकार की अशांति से हम मुक्ति चाहते हैं वह सतही स्पष्टता है उसका होना तो बड़ा ही सरल है और उसी को हम शांति कहते हैं। परंतु शांति का अनुशरण करना इतना आसान नहीं है। हम शांति को केवल तभी समझ सकते हैं जब हम भारी व्यवधान को, भारी असंतोष को जिसमें हममें से प्रत्येक जकड़ा है, समझ लेते हैं, तथा जब मन सरल विचारों से कार्य करने की, सरल लीक वाली प्रक्रिया से छुटकारा पा लेता है और जब मन वास्तव में अशांत होता है पर हम इन सब स्थितियों से बचते हैं।

We do not want to be disturbed, we want things to remain as they are. If you are in a comfortable position, if you own a good house or car, you do not want to be disturbed. You want to let things remain. But here is disturbance going on all the time around you and in you, social disturbance; and so, you become a reactionary, a conservative, you want to let things remain, you are constantly avoiding any form of change and going back to the good old days when things were as they were. While we are young, we are disturbed, we question, we are curious, we want to know. As we grow older, we want not to be disturbed, we want to find out the answers.

हम अशांत होना नहीं चाहते हम चीजों को उसी प्रकार रहने देना चाहते हैं जैसी कि वे हैं। यदि आप सुखद स्थिति में हैं, यदि आपका अपना एक सुन्दर मकान है या कार है तो आप उसमें व्यवधान नहीं चाहते। आप चाहते हैं कि जैसे कुछ चल रहा है चलने दें। परंतु हमारे बाहर एवं भीतर हर समय बेचैनी चल रही है समाजिक बेचैनी और इसीलिए हम प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं रुढ़िवादी हो जाते हैं, आप चाहते हैं कि चीजें वैसी ही बनी रहें, आप किसी भी प्रकार के परिवर्तन को अनवरत टालते रहते हैं, और अतीत के उन शुभ दिनों की याद करते हैं जब सब कुछ सुंदर था। जब तक हम युवा हैं हम बेचैन रहते हैं, हम प्रश्न करते हैं हम जिज्ञासु होते हैं हमारे जानने की चाह होती है। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम अशांत होना नहीं चाहते हम

<p>Our religion is a solace to us, it gives us peace, gives us tranquillity, gives us a sensation of 'we shall be better off next life,' we accept things as they are. So, when we talk about peace, it is a state, for most of us, in which there is no disturbance of any kind. We imagine, we think upon, we meditate on that peace as a state in which there is no kind of disturbance, no kind of revolution, no kind of deep radical change. So, our minds become very dull, lethargic, also dead; what we call peace is dead.</p>	<p>खोजे बिना ही परिणामों का पता लगा लेना चाहते हैं। हमारा धर्म हमारे लिए एक सान्त्वना है, यह हमें शांति प्रदान करता है यह बाधाओं से मुक्ति देता है, यह हमें यह बोध देता है कि “अगले जन्म में हम इससे अच्छी स्थिति में होंगे” और हम इन चीजों को ज्यों-का त्यों स्वीकार कर लेते हैं। अतः जब भी हम शांति की बात करते हैं तो हममें से अधिकांश की यही अवस्था होती है, जिसमें किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होता। हम उस शांति की कल्पना करते हैं सोचते हैं और ध्यान करते हैं जिसमें किसी प्रकार की बेचैनी न हो, किसी प्रकार का गम्भीर परिवर्तन न हो। इसलिए हमारा मन बहुत मूढ़ एवं निष्क्रिय हो जाता है और निर्जीव भी, जिसे हम शांति कहते हैं वह मृतप्रायः होता है।</p>
<p>But I think there is another kind of peace; and that is much more difficult to understand, a peace which is not a reaction, a peace which is not an opposite of conflict. Do you understand what I am talking about? That is the peace where there is no conflict, it is something which is not conflict. I am happy or unhappy; and when I am unhappy, I want to be happy. So, we only know these opposites, these dual processes. I was happy yesterday and I am unhappy today; and I would like to get back to that happiness tomorrow. So, we keep these opposites going on, working, struggling and when we have a thing which we call happiness as opposed to unhappiness, we want to remain in that state. The remaining in that state is what we call a constant security, peace, happiness. That is all we know and we are always asking 'How am I to get back to that state in which I was happy, in which I was secure?' Because, in that primary state, I am not disturbed, I am not afraid. I won't fear that. But, I think, that is not peace.</p>	<p>परंतु मेरी समझ में शांति एक दूसरे ही प्रकार की होती है जिसे समझना बड़ा ही मुश्किल है, वह शांति किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं है, वह शान्ति किसी द्वंद्व का विपरीत नहीं है। क्या आप समझ रहे हैं कि मैं किसकी बात कर रहा हूँ? वह शांति ऐसी है जहाँ कोई द्वंद्व नहीं होता यह कुछ ऐसी चीज है जहाँ कोई संघर्ष नहीं होता। मैं सुख में होता हूँ या दुख में, पर जब मैं दुख में होता हूँ तब सुख की मांग करता हूँ। इस प्रकार हम मात्र विपरीतताओं को द्वैत की प्रतिक्रियाओं को ही जानते हैं। मैं कल सुखी था और आज दुखी हूँ और कल पुनः मैं उस सुख को पाना चाहता हूँ। इस प्रकार इन विपरीतताओं को हम बनाये रखते हैं यह क्रम चलता रहता है या संघर्ष चलता रहता है, और जब हमारे पास वह चीज होती है जिसे हम सुख कहते हैं जो दुख का विपरीत है तो सुख की उस अवस्था में हम बने रहना चाहते हैं। इस अवस्था में अनवरत बने रहने को हम सुरक्षा कहते हैं। सुख एवं शांति कहते हैं। यह सब कुछ हमें ज्ञात है और फिर भी हम यह पूछते रहते हैं कि “मैं पुनः पुनः उस स्थिति को कैसे प्राप्त करूँ जिसमें मैं सुखी था जिसमें मैं सुरक्षित था?” क्योंकि पहले की उस अवस्था में मैं बेचैन नहीं था, भयभीत नहीं था मैं उस भय को नहीं चाहता हूँ। पर मेरी समझ से वह शांति नहीं है।</p>
<p>Peace is not something which is an opposite to conflict. It is not the outcome of struggle, of pain, of suffering of unhappiness. If it is,</p>	<p>शांति कोई ऐसी चीज नहीं है जो द्वंद्व का विपरीत हो। यह संघर्ष पीड़ा, दुख एवं अप्रसन्नता के बाद आने वाली चीज नहीं है। यदि ऐसा है तो वह शांति</p>

then it is no peace; it is just the opposite reaction to 'what is.' This is a bit difficult. Please ask your teachers if they understand it. I hope they do, because it is very important to understand this. Peace is like freedom. Freedom is the love of a thing for itself, it is not the opposite of slavery. The love of something is not for what it will bring you - position, prestige, money, fame, notoriety or what you will. But, it is something in itself without a reward, without being afraid of punishment or failure or success. So, is this thing called peace. Peace is not the opposite of conflict, disturbance, revolution.

नहीं है, वह तो "जो हैं" उसके विपरीत प्रतिक्रिया हैं। इसे समझना थोड़ा कठिन है। कृपया आप इसे अपने अध्यापकों से पूछिये कि वे इसे समझते हैं या नहीं। मेरी समझ से वे इसे समझते होंगे। क्योंकि इसे समझना बड़ा ही महत्वपूर्ण है। शांति, मुक्ति के समान होता है। मुक्ति स्वस्फूर्ति अनुराग है यह दासता का विपरीत नहीं है। किसी चीज से अनुराग का यह मतलब नहीं है कि यह आप को क्या-क्या प्रदान करेगी पद, प्रतिष्ठा, धन, ख्याति, प्रसिद्धि या जो कुछ भी आप चाहेंगे वह सब। अपितु अनुराग अपने आप में कुछ ऐसी चीज है जिसमें न तो पुरस्कार है न दण्ड, न ही सफलता या असफलता का भय है। इसीलिए तो इसे शांति कहते हैं। शांति द्वंद्व, व्यवधान एवं संघर्ष का विपरीत नहीं हैं।

To understand peace which is not the opposite, we must understand the conflicts of the mind. Being disturbed, the mind creates peace, it wants peace, it wants to be left alone, not to be disturbed. So, it creates a haven, a belief, a refuge which it calls peace. But that is not peace; it is only a reaction, a movement away from this to that. But life does not leave you. Life is very disturbed, life being the poor people, the rich people, the camel that suffers with so much weight on its back, the politician, the revolution, the war, the quarrels, the bitterness, the unhappiness, the joy and the dark shadows of life. There is also death in it. The whole of that life is very disturbed. Since it is very disturbed and we do not understand it, we want to run away to something which we call peace; we sit on the banks of the river, close the eyes and think on something which we call peace. That is merely an escape, a reaction, an opposite to the state of disturbance. But, if we can understand all these disturbances - the living, the joy, the unhappiness, the struggles, the jealousies, the envies - if you can understand all that, not run away from it, just look at 'what is', without condemning, just understand 'what is', then out of that, there will be peace which is not an opposite. In that

शांति को समझने के लिए जो किसी का विपरीत नहीं है हमें अपने मन के द्वंद्वों को समझना आवश्यक है। अशांत होने पर यह मन शांति निर्मित करता है यह शांति चाहता है, यह एकाकी होना चाहता है यह अशांत होना नहीं चाहता। इसीलिए यह स्वर्ग निर्मित करता है एक धारणा, एक आश्रय जिसे शांति कहते हैं। परंतु वह शांति नहीं है यह मात्र प्रतिक्रिया है, यहां से वहां की एक गति है। परंतु जीवन आप का त्याग नहीं करता। जीवन बहुत ही अशांत होता है गरीब और धनवान होता है ऊंट जो अपनी पीठ पर इतना बोझ ढोता है, राजनीतिज्ञ, क्रांति, युद्ध, झकड़े, कडुवाहट, प्रसन्नता खुशी और जीवन की अंधेरी छायायें इन सब में जीवन का समविष है। जीवन में मृत्यु का भी समावेश है। सब मिला-जुलाकर देखा जाय तो जीवन बड़ा ही अशांत होता है। चूंकि यह बड़ा अशांत होता है और इसे हम समझ नहीं पाते इसलिए हम शांति की ओर भागते हैं, हम नदी के किनारे बैठ जाते हैं आंखें बन्द कर लेते हैं और कुछ विचार करने लगते हैं इसी को हम शांति कहते हैं। यह सब मात्र पलायन है, एक प्रतिक्रिया है, और अशांति की अवस्था का विपरीत है। परंतु यदि हम इन सब व्यवधानों को समझ सकें जीवित रहना, सुख, दुख झगड़े, ईर्ष्या बैर यदि आप इन सबको समझ सकें इनसे भागें न "जो हैं" उसे केवल देखें बिना निन्दा के "जो है" उसे समझें तो उससे जो शांति प्राप्त होगी वह किसी के विपरीत नहीं होगी। तो वह शांति बड़ी गहन होती है, उसमें एक बिलकुल ही भिन्न क्रिया जन्म लेती है जो सृजनशीलता है, वही

peace, there is great depth, a totally different activity which is creativeness, which is God, which is truth. But one cannot come to it or understand it, if one does not understand the disturbances. In understanding these disturbances, these discontents, these constant enquiries and perplexities, anxieties, the mind becomes very clear. Peace is not something beyond the mind, but it comes when I understand the difficulties. To understand the difficulties, I must not condemn the difficulties, I must not compare one difficulty with another difficulty. I must not say 'Ah! you suffer much more!' Or 'I suffer less.' Suffering is suffering - you do not suffer more and I less or I more and you less. If we know suffering without comparison, we shall try to understand it. Out of that understanding, the mind becomes very simple, very clear, very innocent; and it is this innocence that is peace. The mind that has been through experience, understands the experience and does not stir it, is innocent and it knows peace.

ब्रह्म है, वही सत्य है। परंतु कोई उस अवस्था को तब तक नहीं प्राप्त कर सकता या उसे तब तक नहीं समझ सकता जब तक कि वह व्यवधानों को बाधाओं को नहीं समझ लेता। इन व्यवधानों एवं असंतुष्टियों की समझ से तथा उलझनों एवं दुश्चिंताओं की अनवरत गवेषणाओं से मन बड़ा स्पष्ट हो जाता है। शांति मन के बाहर की चीज नहीं है परंतु यह तब आती है जब हम कठिनाइयों को समझ लेते हैं। कठिनाइयों को समझते समय हमें उसकी बिलकुल ही निन्दा नहीं करनी चाहिए। मुझे यह नहीं कहना चाहिए कि “अहा! आप को तो बहुत ही कष्ट है” या “मुझे कम दुख है” दुख तो दुख है आप अधिक दुख नहीं झेलते हैं, मैं कम दुख झेलता हूँ या मैं अधिक दुख झेलता हूँ आप कम दुख झेलते हैं यदि हम दुख भोग के बिना तुलना को जानते हैं। तब हम उसे समझने का प्रयत्न कर पायेंगे। इस तरह की समझ से मन बड़ा ही सरल और निर्दोष हो जाता है, और यह निर्दोषिता की शांति है। वह मन जो अनुभव के द्वारा परिपक्व हो गया है और वह उत्तेजित नहीं होता वह मन निर्दोष होता है और वही शांति को जान पाता है।

It is rather complex for a young student to understand all this, but you should know all about this, because you will be going out of this place into a world where there is frightful competition, where everyone is out for himself, for the country, for the people, for the god. If we do not understand this process, we will be caught in it, we will be driven by society, by circumstances. It is very important while we are young to be so educated, or to educate ourselves so clearly, so simply, that we can understand the battle of life. But the difficulty is that we spend our days in things that do not really matter. Have you noticed how you spend your day as a student? Mostly in the class room, a few hours of play, go to bed exhausted, wake up and then begin again; never spend a day, an hour or even ten minutes a day, talking about these things that do really matter. Neither the educator nor

युवा वर्ग के छात्रों के लिए यह सब समझना बड़ा ही जटिल है परंतु इन सबके बारे में आप को जानना चाहिए क्यों कि आप इस स्थान को छोड़कर बाहर की दुनिया में प्रवेश करने वाले है जहां संघर्षमय प्रतिस्पर्धा है, जहां प्रत्येक अपने लिए, देश के लिए, और परमात्मा के लिए समर्पित है। यदि इस प्रक्रियाओं को नहीं समझ लेते तो हम भी इसकी पकड़ में आ जायेंगे, और हम समाज एवं परिस्थितियों के द्वारा चलाये जायेंगे। यह बड़ा ही महत्वपूर्ण है कि जब तक हम युवा है हमें इस प्रकार शिक्षित होना है अथवा स्वयं को इतनी स्पष्टता एवं सरलता से शिक्षित करना है कि हम जीवनसंघर्ष को समझ सकें। परंतु कठिनाई यह है कि हम अपने दिनों को ऐसी चीजों में व्यतीत करते हैं जिनका वास्तव में कोई अर्थ नहीं है। क्या आप ने कभी इस पर ध्यान दिया है कि आप विद्यार्थी के रूप में अपना दिन किस प्रकार व्यतीत करते हैं? आप तो अपना अधिकांश समय कक्षा में व्यतीत करते हैं, कुछ घण्टे खेल में व्यतीत करते हैं, और थके-मादे विस्तर पर पड़ जाते हैं प्रातः विस्तर से उठते है और वही क्रिया

<p>those who are being educated spend any of their time going into these matters, finding out the truth of them and knowing how to improve life. That is far more important than passing an examination. Thousands and millions pass examinations all over the world, but they do not mature. Life is a process of learning all the time, understanding continuously. There is no end to understanding you cannot say 'I have finished my examination, I will throw away my books, I am ready for life.' But this is what we generally do. We never pick up the book again after we pass examinations.</p>	<p>प्रतिदिन दुहराते हैं; और दिन घण्टे आधे घण्टे या पूरे दिन दस मिनट भी उन बातों के लिए नहीं देते जो वास्तव में मतलब की हैं। न तो शिक्षक ही। वे लोग जो शिक्षित किये जा रहे हैं, अपना कुछ भी समय इन बातों के लिए देते है जिससे सत्य का पता लगाया जाय और यह जाना जाय कि जीवन को कैसे सुधारा जाय। यह किसी परीक्षा को उत्तीर्ण करने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है दुनिया में हजारों लाखों लोग परीक्षाये पास करते हैं परंतु वे परिपक्व नहीं हो पाते जीवन हर क्षण सीखने और समझने की सतत प्रक्रिया हैं। समझ को कोई अन्त नहीं है, आप यह नहीं कह सकते "मैंने परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है और मैंने अपनी पुस्तकों को दूर फेंक दिया है, अब मैं जीवन के लिए तैयार हूं।" परंतु सामान्यतया हम करते क्या है कि परीक्षाये उत्तीर्ण करने के उपरान्त हम वह पुस्तक कभी नहीं उठाते।</p>
<p>If I can read rightly, then the books have much to tell. But there is something far deeper than books; that is ourselves. In ourselves, if we know how to read the thing that we are, in it there is immeasurable richness. Then you do not have to read a single book. It is all there. But it requires much greater capacity than reading a book; and in reading the thing that you are, none of you are helped and so, you never spend time every day in coming to it and understanding it; you are bored with it. You are tired when the real things are mentioned. Most of us do not want to be disturbed; outwardly, we have jobs, we have occupations, we are teachers and so on; we carry on; and the beauty of life passes by.</p>	<p>यदि मैं पुस्तक को ठीक से पढ़ सका तो पुस्तकों के पास कहने को बहुत कुछ हैं। परंतु पुस्तकों की अपेक्षा कुछ और भी है जो अति गहन है, वह हम स्वयं हैं। यदि हम जानते है कि अपने को कैसे पढ़ा जाय तो हमारे भीतर जानने को अतुलनीय सम्पदा पड़ी है। तब आप को एक भी पुस्तक नहीं पढ़नी पड़ेगी। यह सब कुछ वहां है। परंतु इसके लिए पुस्तक पढ़ने की अपेक्षा आपको क्षमता की आवश्यकता होती है, आप जो कुछ हैं उसे पढ़ने के लिए आप में से किसी को भी कोई सहायता नहीं की जा सकती और इसीलिए प्रतिदिन आप इसके निकट आने में और इसे समझने में कभी समय नहीं देते, क्योंकि आप इससे ऊब जाते हैं। जब यथार्थ की चर्चा की जाती है तो आप थक जाते हैं। हममें से अधिकांश अशांत होना नहीं चाहते, बाह्यरूप में हमारे पास नौकरियां हैं, अनेकों काम धन्धे हैं, हम अध्यापक हैं तथा इसी तरह की अन्य बातें हैं जिसमें हम व्यस्त रहते हैं, और जीवन का सौन्दर्य बीतता जाता है।</p>
<p>J. Krishnamurti Benares, India 21st January 1954, 14th Talk to Students at Rajghat School</p>	<p>“टॉक विथ इण्डियन स्टुडेण्ट” चौदहवीं वार्ता, २१ जनवरी १९५४</p>
	<p>अनुवादक : डॉ. महादेव राम विश्वकर्मा</p>